सत्य की खोज

(प्रत्येक व्यक्ति का मूल कर्तव्य)

लेखक–

मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

अनुवाद– डॉ0 रफ़ीक़ अहमद

प्रस्तावना

यह पुस्तक सत्य की खोज में प्रयासरत भाइयों और बहनों के लिये लिखी गयी है। सत्य की प्राप्ति मानों ईश्वर की प्राप्ति है। सत्य ईश्वर की ओर से होता है और सत्य समस्त मानव जाति के लिये है। ईश्वर ने इन्सानों को जितनी भी नेमतें प्रदान की हैं, उनमें सत्य सबसे अधिक मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण है।

सत्यपूर्ण व्यवस्था को कोई एक व्यक्ति, चाहे वह इतिहास का सबसे बड़ा विचारक और विद्वान ही क्यों न हो, अथवा सारे इन्सान मिलकर भी नहीं बना सकते। इन्सान ने जीवन-व्यवस्था बनाने करने का बार-बार प्रयास किया है परन्तु विफल रहा। उसने सत्य के नाम पर स्वनिर्मित विचार धारायें और धर्म बनाये परन्तु सत्यता यह है कि वह सत्य नहीं है।

यह कार्य ईश्वर ने इन्सान को सौंपा ही नहीं है कि वह सत्य मार्ग का स्वयं निर्माण करे। हमारे सृष्टा और उपास्य ईश्वर ने पहले दिन से इन्सान को जो मूल्यवान अनुग्रह (नेमत) प्रदान की थी, उसका नाम इस्लाम था। जिन महात्माओं एवं महापुरूषों के माध्यम से यह नेमत यानी धर्म इन्सानों को दिया गया वह ईश्वर के दूत थे। बहुत सम्भव है कि भारत में भी भिन्न-भिन्न काल में ईशदूत आये हों। इन्सान अपने अत्याचार एवं दूसरों पर अन्याय करने के उद्देश्य से इस सत्यधर्म को परिवर्तित करता रहा। इस में कमी व वृध्दि करके विभिन्न धर्म बना लिये। अन्त में हज़रत मुहम्मद सल्ल० समस्त मानव जाति के लिये व्यापक एवं पूर्ण रूप में आज से 1450 वर्ष पूर्व सत्य-धर्म लेकर पृथ्वी पर आये।

उन्होंने इस सत्यधर्म को समस्त मानवजाति के लिये प्रस्तुत किया। इसी सत्यधर्म के आधार पर एक नया इन्सान,

नया परिवार, नया समाज और एक नयी व्यवस्था स्थापित किया। इन महान उपलब्धियों की सैद्धान्तिक एवं आंशिक विवरण इतिहास के पन्नों में सुरक्षित है।

ईश्वर के जिन बन्दों के पास पहले से यह धर्म मौजूद है उनका महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि उसके दिल व जान से आदर करें, उस पर अमल करें और उनको अपने देश–बन्धुओं तक अपने कथन एवं कर्म तथा जीवन और चरित्र के द्वारा पहुँचायें। उनके जीवन उद्देश्य वास्तव में इन्हीं दायित्यों का निर्वहन करना है।

जिनके पास यह धर्म नहीं है, उसका अर्थ यह नहीं है कि उनके लिये ईश्वर ने धर्म नहीं भेजा और उसका यह अर्थ भी नहीं है कि जिनके पास पहले से यह धर्म मौजूद है वह मानों उसके मालिक या ठेकेदार हैं, नहीं, बल्कि वह मात्र इस मार्गदर्शन के संरक्षक हैं। इसलिए हमारे देश बन्धुओं और बहनों के लिए ज़रूरी है कि खुले दिल व दिमाग़ के साथ इसे समझने का प्रयास करें। मानव–स्वभाव, बुद्धि एवं विवेक की रोशनी में विचार करें। अपने स्वार्थ, कल्याण और पारलौकिक जीवन में मुक्ति को सामने रखकर मृत्यु से पूर्व इसको अपनाकर जीवन का सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण निर्णय लें। ईश्वर से प्रार्थना है कि जिस उद्देश्य के लिए यह पुस्तक लिखी गयी है वह पूर्ण हो।

मैं डा० मुहम्मद रफ़अत चेयरमैन लेखन कार्य विभाग और मुहम्मद रज़िउल इस्लाम नदवी सचिव लेखन कार्य विभाग का आभारी हूँ कि उन्होंने इस पुस्तक की तैयारी में रुचि ली और लाभकारी परामर्श दिये। ईश्वर उन्हें अच्छा बदला प्रदान करें। आमीन !

मु० इकबाल मुल्ला
सचिव दावत विभाग
जमाअत इस्लामी हिन्द दिल्ली

कुछ आवश्यक बातें

सत्य की खोज में सक्रिाय मेरे भाइयो और बहनों! ईश्वर आपको मार्गदर्शन करे कि आप जीवन के सत्य मार्ग की खोज में सफल हों। शान्ति और सलामती हो उन पर जिन्होंने मार्गदर्शन का अनुपालन किया।

हमारे देश में मुसलमान अपने हिन्दू, दलित, सिख, ईसाई, बौद्ध और जैनी आदि बन्धुओं के साथ शताब्यिों से मिल-जुल कर प्रेम और भाईचारा का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। भेंट और परिचय के इस अवसर पर हम सबको ईश्वर का आभारी होना चाहिये। मुसलमानों का कुछ हद तक परिचय तो आप भाइयों को है, क्योंकि साथ मिलजुल कर रहने के कारण स्वाभाविक रूप से आप उनकी विशिष्टताओं और दुर्बलताओं को जानते हैं। निश्चय ही कुछ गलतफहमियां भी विभिन्न कारणों से पायी जाती हैं, जिन्हें दूर करने का प्रयास समय-समय पर होता रहता है। इस सिलसिले में दोनों ओर से और अधिक प्रयास की आवश्यकता है। परन्तु इस्लाम का सही परिचय आपके सामने नहीं है। प्राकृतिक रूप से बहुत से भाई समझते हैं कि मुसलमान जिस प्रकार धार्मिक विश्वासों का प्रदर्शन करते हैं, जिस प्रकार उपासना करते हैं, जैसे रस्म व रिवाज और त्योहार मनाते हैं, और कुल मिलाकर जो जीवन शैली उन्होंने ग्रहण की है यही पूरा का पूरा अस्ल इस्लाम है। लेकिन वास्तविकता यह है कि आज मुसलमानों का सामूहिक कार्यशैली विशुद्ध रूप से इस्लामी नहीं रह गया है। सदाचारी एवं सुकुर्मी मुसलमान तो सदैव और प्रत्येक

स्थान पर मौजूद रहे हैं और आज भी हैं परन्तु एक समुदाय की हैसियत से मुसलमानों की कार्यशैली विशुद्ध रूप से इस्लाम की सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करती। इतिहास के प्रत्येक काल में इस्लाम का सही परिचय कराने तथा ग़लत फहमियों को दूर करने के प्रयास होते रहे हैं। उनके कुछ अच्छे प्रभाव भी सामने आये हैं परन्तु मात्र इस्लाम का परिचय और गलत फहमियों को दूर करना पर्याप्त न था। मुसलमानों को आमंत्रक की हैसीयत से दावती कर्तव्यों को अदा करना चाहिये था। इसमें उनसे कोताहियां होती रही हैं।

निम्नांकित कुछ बड़ी गलत फहमियों पर आप दृष्टि डालें तो आश्चर्य में पड़ जायेंगे, जैसे----

● चौदह सौ पचास वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इस्लाम की बुनियाद रखी। विश्व के समस्त धर्मो में यह धर्म नया है। इस्लाम के अनुयाइयों को मोहम्डन्स कहते हैं। इसलिये इस्लाम मुहम्मदनिज़्म है। (जबकि वास्तविकता यह है कि इस्लाम इतिहास के उत्भव काल से मौजूद है)

● इस्लाम मुसलमानों का क़ौमी धर्म है जिस प्रकार प्रत्येक जाति का एक धर्म है। (वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने समस्त मानवजाति के लिये एक ही धर्म निश्चित किया)

● मुहम्मद सल्ल० मुसलमानों के पैग़म्बर हैं। दूसरी जातियों अथवा धार्मिक समुदायों से उनका कोई लेना-देना नहीं है। (वास्तविकता यह है कि मुहम्मद सल्ल०, सम्पूर्ण संसार के लिये दया हैं)

- क़ुरआन के लेखक मुहम्मद सल्ल० हैं। यह मुसलमानों की क़ौमी और धार्मिक पुस्तक है। क़ुरआन में मुसलमानों के अतिरिक्त सभी इन्सानों को काफ़िर (नास्तिक) और मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) कहा गया है और उन्हें जान से मारने की शिक्षा दी गयी है। क़ुरआन के होते हुये शान्ति एवं भाईचारा स्थापित नहीं हो सकता। (जबकि क़ुरआन ईश्वर की ओर से है और अकारण किसी व्यक्ति के क़त्ल को बहुत बड़ा पाप और अपराध बताता है)
- मुसलमान मस्जिदों मे पांच बार अकबर बादशाह को पुकारते हैं (अज़ान की ओर संकेत है) जबकि अकबर आज से मात्र पांच सौ वर्ष पूर्व गुजरा है। अज़ान चौदह सौ वर्ष से दी जा रही है)
- इस्लाम में औरत बहुत मज़लूम और उत्पीड़ित है। पर्दा के द्वारा उस पर ज़्यादती की जाती है, उसे शिक्षा ग्रहण करने और अन्य अधिकारों से वंचित किया गया है। (जबकि इस्लाम ने औरत के सभी मानवीय अधिकार स्वीकार किये हैं और शताब्यिों से हो रहे अन्याय से उसे नजात दिलायी है)
- मुसलमानों के लिये चार विवाह करना अनिवार्य बताया गया है। प्रत्येक मुसलमान बीस से पच्चीस बच्चे पैदा करता है। (जबकि मुसलमानों में दो विवाह करने वालों का अनुपात भारत के ग़ैर मुस्लिमों की अपेक्षा बहुत कम है)

यह और इनके अतिरिक्त अन्य बहुत सी ग़लत फ़हमियां और दुर्भावनायें इस्लाम और मुसलमानों के बारे

में पायी जाती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि अत्यन्त व्यापक पैमाने पर इन गलत फ़हमियों को दूर करके इस्लाम का विस्तृत एवं वास्तविक परिचय कराया जाये। यह कार्य वर्तमान परिस्थितियों में एक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं मानवीय कर्तव्य है। इसके बिना इस देश में भाईचारा एवं प्रेम सम्बन्धों का पैदा होना संभव नहीं है। कुछ अच्छे और सच्चे मुसलमान तथा कुछ संस्थायें ग़लत फ़हमियों और दुर्भावनाओं को दूर करने की निरंतर प्रयास कर रही हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इस्लामी साहित्य का प्रकाशन भी एक लाभकारी माध्यम है। परन्तु आप भी करोड़ों देशवासियों के सामने इस्लाम का सही परिचय नहीं हो पा रहा है। इस सम्बंध में एक हक़ीक़तं यह भी है कि मुसलमान अपने व्यवहारिक जीवन को इस्लाम का नमूना बनायें और देश बन्धुओं के साथ इस्लामी चरित्र और सद् व्यवहार का तरीका अपनायें तो यह इस्लाम का सही परिचय होगा।

इस्लाम के हवाले से यह कुछ महत्वपूर्ण बातें आपकी सेवा में प्रस्तुत की गयीं, ताकि आप हर प्रकार के पक्षपातों से ऊपर उठकर सत्य की खोज के सच्चे ज़ज़्बे से अनुसंधान के महत्व और आवश्यकता को अवश्य महसूस करें। आपको प्रस्तुत की गयी बातों से सहमति या मतभेद की पूरी स्वतन्त्रता है। परन्तु प्रत्येक इन्सान को यह हरहाल में विचार करना चाहिये कि सत्य धर्म कौन सा है, इसलिये कि सत्य का इन्कार करने के बाद इन्सान कैसे सफल हो सकता है? और

पारलौकिक जीवन में अपने पैदा करने वाले के समक्ष क्या विवशता प्रस्तुत कर सकेगा? वहाँ वह अपने सृष्टा के क्रोध और उसके नतीजे में नर्क के भयानक यातना का जोखिम क्यों मोल ले ।

स्पष्ट है कि सत्य पर किसी व्यक्ति या धार्मिक समुदाय का एकाधिकार नहीं है। वह भौगोलिक सीमाओं का पाबन्द नहीं। सत्य तो समस्त मानव जातियों के लिये शुभकार्यता, कल्याण एवं मुक्ति का ज़ामिन होता है। सत्य का इन्कार किया जाये और उसे झुठलाया जाये तो सत्य नाकाम नहीं होता बल्कि उसे झुठलाने वाला इन्सान या समुदाय नाकाम होता है। सत्य को झुठलाने के बाद जिस मार्ग को भी ग्रहण किया जाता है, वह वास्तव में ईश्वर की अवज्ञा का मार्ग है। इसका परिणाम मृत्यु के उपरान्त पारलौकिक जीवन में मुक्ति से वंचित रहना और नरक की की यातना है।

आप केवल यह न देखें कि इन बातों को प्रस्तुत करने वाला कौन और कैसा है ? बल्कि यह देखें कि इन बातों में सच्चाई और हक़ कितना है ? जो बातें प्रस्तुत की जा रही हैं क्या वह अक़्ल और दलील का वज़न रखती हैं? क्या वह मानवीय स्वभाव के अनुकूल हैं ? क्या इन्सान के अस्तित्व और जगत में पाई जाने वाली अनगिनत निशानियां इन बातों की पुष्टि करती हैं? यह भी देखें कि कहने वाला यह बातें क्यों कह रहा है? क्या इस सन्देश से उसका कोई व्यक्तिगत या क़ौमी स्वार्थ संलग्न है ? खुले

और स्पष्ट मन से इन प्रश्नों पर विचार किया जाये तो निश्चितरूप से आपका हृदय पुकार उठेगा कि यही सत्य सन्देश है। इसका इन्कार एक अस्वभाविक और अनुचित रवैइया है।

इन्सान को यह जीवन एक ही बार प्रदान किया गया है, मृत्यु से पूर्व वह अपनी भलाई, बुराई, लाभ और हानि के बारे में सोच-विचार कर सकता है और निर्णय भी। परन्तु जहां एक बार मृत्यु आ गयी आँखें बन्द हो गयीं और उसके पारलौकिक यात्रा का आरम्भ हो गयी तो वह अपने लिये कुछ नहीं कर सकता। प्रत्येक इन्सान की सबसे बड़ी समस्या मृत्यु के बाद शाश्वत जीवन में सफलता की प्राप्ति और नाकामी से बचने का है। इस समस्या को बुनियादी और गम्भीर समस्या समझना चाहिये। इसे नज़र अंदाज करके दुनिया में बेपरवाई का जीवन व्यतीत करना भयानक भूल है। परलोक की असफलता का परिणाम नरक की अग्नि में जलने के रूप में सामने आयेगा। कितना भयानक है यह परिणाम ! क्या उससे बचने का प्रयास करना प्रत्येक इन्सान का दायित्व नहीं है ?

इन्सान की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी

इन्सान की अत्यन्त महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी हैं कि वह अपने पैदा करने वाले की दी हुई हिदायत और मार्गदर्शन (धर्म) की खोज करे। उसे अपनी ओर से कोई नया धर्म या नया मार्ग बनाने की आवश्यकता नहीं है। अतीत में इन्सान ने यह प्रयास किया है और सैकड़ों धर्म बना डाले हैं। धर्मों की यह बहुलता इस प्रयास की विफलता का सबसे बड़ा सुबूत है।

इन्सान के अन्दर नैतिक साहस होना चाहिये। यदि उसके माता-पिता तक सत्य की रोशनी नहीं पहुँच सकी तो सत्य जहां से भी प्राप्त हो, सोच-विचार और बुद्धि एवं तर्क के आधार पर उसे स्वीकार कर ले। इसमें किसी भी रुकावट को पैदा न होने दे। आमतौर से लोग समझते हैं कि धर्म के मामले में माता-पिता के रास्ते या जीवन शैली तथा धार्मिक धारणाओं को छोड़ना नहीं चाहिये। उनका यह ख्याल है कि दूसरे धार्मिक धारणाओं को, चाहे वह कितने ही सत्यनिष्ट एवं तर्कसंगत हों, स्वीकार नहीं करना चाहिये। इस आचरण पर विचार करने की आवश्यकता है। यदि हमारे पूर्वज सत्य मार्ग के राही थे तो उस मार्ग पर चलने और उनकी धारणाओं को स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन यदि किसी कारणवश उन्हें सत्य नहीं मिल सका, या वह उससे अनभिज्ञ रहे और फिर भी हम अपने पूर्वजों के रास्ते पर चलें तो फिर क्या होगा ? इन्सान मूलतः ईश्वर का बन्दा है। अपने बाप-दादा या किसी दूसरे इन्सान का बन्दा नहीं है। इसके लिये तो एक ही रास्ता

सही है और वह कि एक ईश्वर की सम्पूर्ण दास्ता और आज्ञापालन करे, स्वयं को बिना किसी शर्त के ईश्वर के हवाले कर दें। इसी को ईश्वर पर विश्वास और एकेश्वरवाद (तौहीद) कहते हैं। इस धारणा में बहुदेववाद से बचना बहुत ज़रूरी है। इसकी तफ़सील अगले पन्नों में आयगी।

एक महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि ईश्वर पर ईमान का अर्थ मात्र उसको मान लेना नहीं है, बल्कि ईश्वर की सही अवधारणा सामने होना चाहिये। उसके सारे गुण और उनके तकाज़ें मालूम होना चाहिये। इसी प्रकार उसकी पसन्दीदा जीवन शैली को जानना और मानना ज़रूरी है। यह सारी बातें ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को सीधे तौर पर नहीं बताई हैं, बल्कि उसकी एक उचित व्यवस्था प्रदान की है। वह पैगम्बरों और ईशदूतों का सिलसिला है जो हज़रत आदम से प्रारम्भ होकर अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर समाप्त हुआ। इसलिये समस्त ईशदूतों और पैगम्बरों को मानना और हज़रत मुहम्मद को अन्तिम ईशदूत स्वीकार करना अनिवार्य है। किसी एक पैगम्बर या ईशदूत का इन्कार सभी ईशदूतों और पैगम्बरों का इन्कार है, क्योंकि सारे ईशदूत ईश्वर के भेजे हुये थे, ईशदूत का इनकार अन्ततः ईश्वर का इनकार है।

सत्य स्पष्ट हो जाने के बाद, ज़िद, हठधर्मी, पक्षपात, घृणा, स्वार्थ और मात्र बाप-दादा के अनुसरण के लिये उसे झुठला देना बहुत बड़ी नाकामी है, इस प्रकार इन्सान पारलौकिक जीवन में नरक की यातना का जोखिम उठाता है।

ईश्वर ने इन्सान को बुद्धि एवं विवेक की नेमतें प्रदान की हैं। इसी के साथ उसे इरादा और अमल की स्वतन्त्रता एवं अधिकार भी दिया गया है। वह अन्य प्राणियों के समान पूर्ण रूप से मजबूर नहीं है। इन्सान को ये योग्यतायें और विशेष क्षमतायें, उसे मात्र सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं इच्छाओं की संतुष्टि के लिये नहीं प्रदान की गयी हैं। इस प्रकार तो वह सिर्फ जानवर बन कर रह जायेगा। जिस ईश्वर ने जीवन जैसी क़ीमती नेमत और विशेष योग्यतायें उसे प्रदान की हैं। उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करना उसकी इच्छा और प्रिय जीवन प्रणाली को ग्रहण करना, मानव का कर्तव्य है। ऐसे दयावान, उपकारी और कृपाशील ईश्वर की नाराज़गी से बचने की कोशिश करना ज़रूरी है। उसके साथ गद्दारी और बेवफाई से बचना इन्सान की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

इन्सान यह मालूम करने का कोशिश करे कि आखिर ईश्वर ने उसे जीवन और विभिन्न योग्यतायें और क्षमतायें किस लिए प्रदान की हैं? मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने दुनिया में ईश्वर की दी हुई योग्यताओं के बल पर बड़े-बड़े कारनामे अन्जाम दिये, लेकिन उसने अपने सृष्टा के बताये हुये जीवन उद्देश्य को पूरा नहीं किया, तो वह उसकी सबसे बड़ी विफलता होगी। मृत्यु के पश्चात इस कोताही की क्षतिपूर्ति का कोई अवसर उसे नहीं मिलेगा। ऐसी स्थिति में क्या यह प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण और मूल दायित्व नहीं है कि अपनी मृत्यु से पूर्व

जीवन के वास्तविक उद्देश्य को मालूम करे और उसे इस दुनिया में पूरा करने की कोशिश करे ताकि दुनिया में संतुष्टि, शान्ति एवं सुखमय जीवन व्यतीत कर सके और मृत्यु के बाद ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त कर स्वर्ग के स्थायी आनन्द का पात्र बन सकें।

ईश्वर के बारे में यह कुधारणा नहीं रखी जा सकती कि उसने मानव की उत्पत्ति की, उन्हें जीवन प्रदान किया और बुद्धि एवं विवेक की विशेष नेमतें और योग्यतायें प्रदान कीं, परन्तु उन्हें जीवन का कोई उद्देश्य नहीं बताया और संसार में यूं ही स्वछन्द जीवन व्यतीत करने के लिये स्वतंत्र और बेलगाम छोड़ दिया । फिर क्या मृत्यु के बाद उनसे पूछगच्छ भी न होगी ?

एक और पहलू से विचार करें, इन्सान बुद्धि एवं विवेक से काम ले तो क्या यह बात ठीक मालूम होती है कि हिसाब का ऐसा दिन नहीं आयेगा जब इन्सान मरने के बाद दोबारा जीवन पाकर ईश्वर के समक्ष उपस्थित हो और उससे नेमतों और अधिकारों के बारें में पूछताछ हो और ईश्वर हिसाब किताब ले। सफल होने वालों को अपनी एवं पुरस्कार प्रदान करे और नाकाम होने वालों को कठोर दंड दे। बुद्धि तो कहती है कि ऐसा अवश्य होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो यह ईश्वर की दया, न्याय एवं तत्वदर्शिता के विरुद्ध होगा। विवेक का यह निर्णय शतप्रतिशत उचित है।

मानवजाति की भलाई इसमें है कि सांसारिक जीवन और उसकी नेमतों और संसाधनों को ईश्वर की मेहरबानी

और कृपा समझें, उनकी क़द्र करे, ईश्वर का शुक्र गुज़ार बन्दा बनकर उसकी सम्पूर्ण दासता और गुलामी अपनाये। उसके अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० के माध्यम से जो मार्गदर्शन इन्सानों को दिया गया है, उस पर ईमान लाये और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पूर्ण आज्ञापालन करे। सांसारिक कल्याण एवं पारलौकिक मुक्ति का यह मात्र अकेला रास्ता है।

जिन लोगों के पास ईश्वरीय मार्गदर्शन और अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० का व्यहारिक आदर्श पहले से मौजूद है, उनकी ज़िन्दगी है कि उस पर पूरी तरह अमल करें। अपने जीवन से विरोधाभाष और पाखन्ड को समाप्त करें। अपने व्यवहारिक जीवन को हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शिक्षाओं का नमूना बनायें और इन्सानों को प्यार व मुहब्बत, तत्वदर्शिता एवं दिली तड़प के साथ सत्य की ओर आमंत्रण दें। इसके नतीजे में जो पुनीत आत्मायें सत्य मार्ग को ग्रहण करती हैं उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करें, उनके साथ इस्लामी भाईचारा का बर्ताव करते हुये उनकी समस्याओं को अपनी समस्या, उनकी प्रसन्नता और दुख को अपनी प्रसन्नता एवं दुख समझें, उन्हें महसूस न हो कि सत्य की स्वीकृति के बाद वह सबसे कट कर अकेले रह गये है।

एक ईश्वर को मानना अनिवार्य है

ईश्वर का इनकार करने वाले हर दौर में कम ही रहे हैं। अधिकांश धर्मों में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है, परन्तु विभिन्न धर्मों में उसकी कल्पना समान नहीं है, बल्कि कई पहलुओं से भिन्न-भिन्न है। यूँ भी केवल ईश्वर को एक मान लेना पर्याप्त नहीं। ईश्वर से सम्बंध को इन्सान मात्र अपनी बुद्धि, अनुभव एवं अवलोकन के द्वारा समझने का प्रयास करता है तो उसके भटक जाने की आशंका है। क्योंकि ईश्वर सूंघने, चखने, देखने और महसूस करने की वस्तु नहीं है। ईश्वर को अपनी ऑंखों से नहीं देखा जा सकता बल्कि उसको बिना देखे उन निशानियों पर चिंतन करना है जो उसके अस्तित्व को इशारा करती हैं और सम्पूर्ण जगत में व्याप्त हैं। इन पर सोच-विचार करके एक ईश्वर को मानना यही बड़ी परीक्षा है। इन्सान की मूल आवश्यकता यह है कि उसे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो। ईश्वर के गुणों और उनकी अपेक्षायें ठीक तौर से मालूम हों और उसकी इच्छा तथा उसके पसन्दीदा तरीक़े ज़िन्दगी को वह अच्छी तरह से जान ले ताकि उस पर निष्ठापूर्वक अमल कर सके।

यह भी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि ईश्वर ने मानव जीवन का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, मानव उसको जान ले और उसको प्राप्त करने में सफल हो। इसी के नतीजे में वह परलोक में ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त कर स्वर्ग प्राप्त कर सकता है। इस महत्वपूर्ण आवश्यकता को ईश्वर ने स्वयं पूरा किया है। उसने मानव को इस दुविधा में नहीं

डाला कि वह बुद्धि और अनुमानों के घोड़े दौड़ा कर मालूम करे कि ईश्वर कौन है, उसके गुण क्या हैं? मात्र बुद्धि के ज़रीये से इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढने में मानव भटक जाता है तथा शैतान का शिकार हो जाता है। ईश्वर ने इन्सानों को अपने अस्तित्व एवं गुणों का परिचय और अपेक्षाओं का ज्ञान देने के लिये ईशदूतों और पैगम्बरों को दुनिया में भेजा। उनके ऊपर ग्रन्थ और पुस्तकें अवतरित कीं। अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं और ईश्वर का अन्तिम ग्रन्थ क़ुरआन मजीद है। मानव की भलाई इसी में है कि वह ईश्वर के ग्रन्थों और उसके ईशदूतों पर ईमान लाये और अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अनुसरण और पैरवी करे।

कुछ लोगों की ओर से ईश्वर का इन्कार करने के सम्बंध में एक दलील दी जाती है कि वह हमें दिखाई नहीं पड़ता परन्तु यह दलील बहुत कमज़ोर है। क्योंकि ईश्वर को मानने के लिये उसको देखना शर्त नहीं है। हम कितनी ही ऐसी वस्तुओं को मानते हैं जिन्हें खुली आँखों से नहीं देखते। जैसा आन्तरिक्ष (Space) के अस्तित्व को वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं लेकिन आन्तरिक्ष हमें दिखाई नहीं देता। यही मामला आत्मा तथा चुम्बकीय शक्ति आदि का है।

इन सबको हम अपनी आँखों से नहीं देखते, लेकिन उनकी ओर संकेत करने वाले तथ्यों पर विचार करके उनके अस्तित्व को स्वीकार कर लेते हैं। इन्सान की आँखों में इतनी शक्ति नहीं कि वह ईश्वर को देख सके। तेज़ धूप में सूर्य अपनी पूरी शक्ति के साथ चमक रहा हो,

तो यदि कोई नंगी आँखों से उसे देखने की कोशिश करेगा तो उसकी नेत्र ज्योति नष्ट हो जायेगी। इसी प्रकार बिजली जब कड़क और चमक के साथ आकाश पर आती हो उसे नज़र जमाकर देखने की कोशिश में आँखा की रोशनी खत्म हो सकती है। इस प्रकार के और भी उदाहरण हो सकते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने बताया कि ईमान वाले और सत्कर्म करने वाले लोग मृत्यु के उपरान्त जब स्वर्ग में जायेगें तो वहां उनकी आँखों में इतनी शक्ति पैदा हो जायेगी कि वह ईश्वर को देख सकेंगे। कुछ धार्मिक समुदाय यह दावा करते हैं कि वह इसी संसार में ईश्वर को दिखायेगें। लेकिन यह दावा सही नहीं है। इस सम्बंध में समझना चाहिए कि ईश्वर को इस जीवन में देखना हमारी कोई ज़रूरत नहीं है और न हमें इससे कोई लाभ प्राप्त होगा। ज़रूरत तो ईश्वर के मार्गदर्शन की प्राप्ति है। कुरआन में कहा गया है कि ईश्वर पृथ्वी एवं आकाश का प्रकाश है।

ईश्वर अपने बन्दों पर अत्यन्त दयावान है कि उसने अपने परिचय का मार्ग दिखाया और अपने गुणों का परिचय ईशदूतों के माध्यम से मानव को प्रदान किया और गुणों के व्यवहारिक तकाज़े बताये, जीवन पर उनके प्रभावों को बताया। ईश्वर की उपासना करने और जीवन में उसे याद रखने के समस्त तरीक़े इन्सानों को बता दिये। ईशदूतों की ज़िम्मेदारी थी कि वह उन बातों पर चल कर इन्सानों के लिये अपने जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करें। इस के विपरीत कितने ही धार्मिक समुदाय इतिहास में ऐसे गुज़रे हैं, जिन्होंने अपनी-अपनी सीमित बुद्धि एवं अनुमान पर भरोसा किया,

ईश्वर की उपासना के तरीक़े स्वयं ही निर्धारित करने का असफल प्रयास किया और रास्ते से भटक गये। कुछ नासमझ लोग कहते हैं कि उद्देश्य तो एक ईश्वर की ही पूजा एवं उपासना करना है, परन्तु बीच में माध्यम के रूप में कुछ और साधन अपना लिये गये हैं, उदाहरण स्वरूप मूर्तियां या महापुरुष या कुछ और रूप। उनकी पूजा और उपासना करके सच्चे ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है। प्रश्न यह है कि क्या ईश्वर ने यह सब करने का आदेश दिया है या कम से कम इसकी अनुमति दी है ? यदि दिया है तो किस धार्मिक ग्रन्थ या किस ईशदूत या महापुरुष की शिक्षा में यह आदेश मिलता है ? यह प्रश्न भी उत्पन्न होता है कि क्या ईश्वर ने यह बात किसी धार्मिक ग्रन्थ या किसी ईशदूत के द्वारा बताई है कि इन्सान सीधे तौर पर सच्चे ईश्वर की उपासना और इबादत नहीं कर सकता और उससे प्रार्थना नहीं कर सकता। क़ुरआन के अनुसार यह दोनों बातें सही नहीं हैं। प्रत्येक मनुष्य ईश्वर पर ईमान लाकर उसकी इबादत और उपासना कर सकता है। उससे सीधे तौर पर प्रार्थना कर सकता है, बल्कि केवल उसी से मांगना ही जायज़ है।

जो लोग ईशदूतों की स्वच्छ एवं स्पष्ट शिक्षाओं को दलीलों की मौजूदगी के बावजूद नहीं मानना चाहते उनका यह आचरण सही नहीं है बल्कि ज़िद और हठधर्मी का पता देता है। ऐसे लोग मरणोत्तर जीवन में अपनी आँखों से उन परोक्ष सच्चाइयों को देखेगें तो आश्चर्य में पड़ जायेगें और इन्कार की हिम्मत नहीं होगी, लेकिन उस

समय ईशदूतों की शिक्षाओं को स्वीकार करने का कोई फायदा नहीं होगा। मरणोत्तर जीवन का दिन कर्मों के फैसले और परिणाम का दिन होगा। इन्सान अपने जन्म और अपने अस्तित्व पर ग़ौर करे और जगत की सच्चाइयों पर विचार करे तो उसे अनगिनत निशानियां मिलेंगी जिन्हें देखकर वह एकायक पुकार उठेगा कि वास्तव में एक ईश्वर ही सबका सृष्टा और स्वामी है। इन निशानियों की जानकारी के लिये क़ुरआन का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। विभिन्न भाषाओं में कुरआन के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और सरलता से उपलब्ध भी हो सकते हैं। डा० खुर्शीद अहमद अपनी पुस्तक ''इस्लामी नज़रिया-ए-हयात'' में लिखते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि हर वह व्यक्ति जो देखने वाली ऑख और सोचने वाला दिमाग रखता हो, इस जगत की वास्तविकताओं को देखकर यकायक पुकार उठता है कि यह संसार एक तत्वदर्शी और सर्वज्ञ सृष्टा और शासक के बग़ैर न अस्तित्व में आ सकता था और न स्थापित रह सकता है। पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण जगत एक पूर्ण व्यवस्था है और यह संपूर्ण व्यवस्था एक क़ानून के अन्तर्गत चल रही है, जिस में हर तरफ एक सर्वव्यापी सत्ता, एक दोष रहित तत्वदर्शिता एवं त्रुटिहीन ज्ञान के आसार दिखाई पड़ते हैं। यह आसार इस बात की पुष्टि करते हैं कि इस व्यवस्था का एक संचालक है। व्यवस्था की कल्पना एक व्यवस्थापक के बिना, शासन की कल्पना एक

शासक के बिना, तत्वदर्शिता की कल्पना तत्वदर्शी के बिना और ज्ञान की कल्पना एक ज्ञानी के बिना और सबसे बढ़कर सृष्टि की कल्पना सृष्टा के बिना किस प्रकार की जा सकती है। यह जगत एक योजना के अन्तर्गत काम कर रहा है। क्या यह योजना, एक योजनाकार के बिना ही चल रहा है? इस जगत में अन्तिम सीमा तक सौन्दर्य और सन्तुलन है। यह सौन्दर्य और सन्तुलन एक संचालक के बिना कैसे सम्भव है। इसके बावजूद हम ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार न करें, और जगत का स्वामी किसी और को बताये तो मानवीय एवं हैवानी अस्तित्व की व्याख्या बड़ी कठिन नज़र आती है। सरसरी तौर पर बड़ी आसानी से कहा जा सकता है कि विभिन्न तत्व एक अनुपात से मिले और जानवर या इन्सान अस्तित्व में आ गये, लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक विकास के आधार पर ऐसी आकस्मिक घटनाओं को स्वीकार करना बड़ा कठिन हो गया है (यह सम्भव नहीं रहा है)

(इस्लामी नज़रिया–ए–हयात पेज– 191–193)

एक अत्यन्त सुन्दर, सुव्यवस्थित तथा स्थिर ब्रह्माण्ड यहां मौजूद है। इसमें पृथ्वी से करोड़ों गुना बड़े तारे पाये जाते हैं, ऐसी आकाश गंगायें हैं जिनमें करोड़ों और अरबों नक्षत्र चक्कर लगा रहे हैं। वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड की व्यापकता और विशालता का आज तक सही अनुमान नहीं लगा सके। कुछ समय पहले विख्यात अंग्रेज़ी पत्रिका ''रीडर्स डाइजेस्ट'' ने बड़े आकार में ब्रह्माण्ड में ग्रहों,

उपग्रहों और आकाश गंगाओं के चित्रों को प्रकाशित किया था। उसके एक ओर एक बारीक सा बिन्दु लगा कर उसकी ओर तीर का निशान बना कर उसके नीचे लिखा था ‘‘our solar system lies some where between here’’ इस वाक्य को पढ़कर ब्रह्माण्ड की विशालता एवं व्यापकता का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार के विशाल ब्रह्माण्ड की रचना क्या कोई आकस्मिक घटना हो सकती है? एक अच्छा सा शेअ्र (कविता की दो पंक्ति) हमारे सामने कोई कह दे तो हम पूछते हैं कि यह किस कवि की रचना है? एक अच्छी सी तस्वीर हम देखते हैं तो प्रश्न होता है कि किस कलाकार ने इसको बनाया है? एक सुन्दर महल को देखकर दिमाग उसके इन्जीनियर और आर्किटेक्ट की ओर जाता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जिसमें हमारा विशाल संसार भी शामिल है, उसको देखकर उसके सृष्टा और स्वामी की कल्पना नहीं आयगी ?

क्या कोई सद्‌बुद्धि रखने वाला व्यक्ति इस प्रकार की बात स्वीकार कर सकता है? यह कितनी अतार्किक एवं अनुचित बात है। यदि कोई कहे कि यह ब्रह्माण्ड ईश्वर के बग़ैर अस्तित्व में आया है और आपसे आप या संयोगवश चल भी रहा है। प्रो० जोड ने कहा है–

‘‘सरजेम्स जीन्स और सर आर्टबाइन्ड मकसन की पुस्तक हमें बताती है कि बीसवीं शताब्दी के भौतिक विज्ञान ने संसार के बारे में उन्नीसवीं शताब्दी की धारणाओं में क्रान्ति पैदा कर दिया है और यह क्रान्ति धर्म से निकटता और सत्यरूपता की दिशा में है। आज विज्ञान एवं धर्म

ब्रह्माण्ड की वास्तविकता के बारे में एक ही प्रकार की बात कह रहे हैं। जबकि अपने परिणामों तक पहुँचने के लिये दोनों की शोध एवं अध्ययन की पद्धति भिन्न-भिन्न हैं। हम कह सकते हैं कि आज विज्ञान ने ईश्वर की कल्पना को स्वीकार कर लिया है'' (इस्लामी नज़रिय-ए-हयात पेज-191) (God and evil by jode page - 140)

ईश्वर का इनकार करने वालों का एक तर्क यह भी है कि ब्रह्माण्ड और मानव जीवन की उत्पत्ति में किसी सृष्टा का कोई हस्तक्षेप नही है। क्योंकि पदार्थ ही मूल है और यह अनादि और अनन्त है। उसी से समस्त माजूद चीज़ों का, चाहे वह सजीव हों या निर्जीव, अस्तित्व हुआ है। पदार्थ की बुनियाद कणों पर हैं जो बुनियादी हैं इन्ही कणों के संयोगवश मिल जाने से हर वस्तु अस्तित्व में आई है। यहां तक कि इन बेजान कणों के संयोगवश मिलान के फलस्वरूप मानव की भी रचना हुई है।

इस विचारधारा के मानने वालों को अधर्मी या भौतिकवादी कहा जाता है। आधुनिक युग की वैज्ञानिक अविष्कारों की रोशनी में इस विचारधारा की हक़ीक़त और तर्कसंगत होने पर विचार किया जा सकता है।

यह विचारधारा मात्र एक दावा है जो तर्कहीन, गैर साइंसी और अतार्किक है। इसकी हैसीयत मात्र एक कल्पना से बढ़ कर नहीं है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध कार्यो ने इस दावे की धज्जियां बिखेर दी हैं। आज के विज्ञान का पूरा रुझान यह है कि पदार्थ अनादि और

अनन्त नही है। इसलिये कि ब्रह्माण्ड की बाकायदा शुरूआत हुई है। इस सम्बंध में बिग बैंक के सिद्धांत को प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार ब्रह्माण्ड धीरे-धीरे अपने अन्त एवं समाप्ति की ओर बढ़ रहा है।

दूसरी कल्पना यह कि दो सदी पूर्व समझा जाता था कि कण समाप्त नहीं होते। वैज्ञानिक शोध के नतीजे में यह विचार ग़लत साबित हो चुका है। अब कणों के नतीजे में परिवर्तन का कार्य होता है। ऊर्जायें बाहर निकलती हैं, बल्कि कण भी नष्ट हो जाते हैं।

तीसरी कल्पना यह है कि निर्जीव पदार्थ से जीवन, बुद्धि और विवेक, अस्तित्व में आते हैं। लेकिन ऐसा भी होता है कि निर्जीव पदार्थों का मिश्रण देखने में तो बना रहता है लेकिन नष्ट हो जाता है। अधर्मी इसकी कोई व्याख्या नहीं कर सकते।

चौथी कल्पना यह है कि संयोगवश कणों के मिलान से ही ब्रह्माण्ड और प्रत्येक अस्तित्व की रचना हुई है। परन्तु गणित के अनुसार संयोग की सम्भावना इतनी कम है कि संयोगवश जगत की रचना अत्यन्त विवेकहीन प्रतीत होती है।

इस संक्षिप्त विश्लेषण के बाद यह नतीजा सामने आता है कि ईश्वर का अस्तित्व यकीनी और निश्चित है और उसे मानना हमारे जीवन के लिये बहुत ज़रूरी है। यह बात भी स्पष्ट है कि उसके बारे में सही जानकारी की प्राप्ति

और उसकी पहचान से इन्सान की सीमित बुद्धि, दर्शन तथा विज्ञान असमर्थ है। इस मौलिक ज्ञान के लिये ईश्वर ने ईशदूतों का सिलसिला ज़ारी किया। अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर आज से साढ़े चौदह सौ वर्ष पूर्व प्रकाशना के द्वारा कुरआन अवतरित किया गया। क़ुरआन में ईश्वर का सही परिचय कराया गया है। उसके अस्तित्व एवं गुणों को बताया गया है और बताया गया कि ईश्वर को स्वीकार कर लेने के तक़ाज़े क्या हैं? और मानव जीवन पर उसके क्या प्रभाव पड़ते हैं? कुरआन में विस्तार से बताया गया है कि कौन सी आस्थायें और कर्म ईश्वर को स्वीकार करने के विरुद्ध हैं। उन आस्थाओ और कर्मों के बुरे परिणाम संसार और परलोक में किस प्रकार सामने आयेंगे। उन बुरे परिणामों से बचने का तरीक़ा क्या है? ईश्वर की उपासना और इबादत किस प्रकार की जाये?

इन सभी सच्चाइयों को स्वीकार करने के लिये किसी विशेष नस्ल, रंग, भाषा और क्षेत्र की कोई शर्त नहीं है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति इन पर विचार करके बुद्धि और स्वभाव तथा नतीजे के आधार पर उन्हें स्वीकार और ग्रहण कर सकता है। कुरआन किसी भी सच्चाई को ऑखे बंद करके मानने की दावत नहीं देता। इन अवधारणाओं को स्वीकार या निरस्त कर देने की स्वतन्त्रता और अधिकार इन्सान को हासिल है। कुरआन बताता है कि इस अधिकार के प्रयोग की पूरी ज़िम्मेदारी इन्सान पर ही होगी। स्वीकार करने की स्थिति में सफलता मिलेगी और निरस्त करने की स्थिति में भयानक विफलता का सामना खुद करना पड़ेगा।

इस्लाम में “ईश्वर” की अवधारणा

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने जब अरब वासियों में एक ईश्वर की उपासना का सन्देश पहुँचाया तो लोगों में स्वाभाविक रूप से यह जिज्ञासा पैदा हुई कि यह ईश्वर कैसा है? किस चीज़ से बना है? उसके गुण क्या हैं? वह उनके पूर्व पूज्यों से क्यों और किस प्रकार भिन्न है ?

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने ईश्वर का पूर्ण परिचय कराया, उसके गुणों का पूर्ण एवं सविस्तार परिचर्चा ही नहीं की बल्कि उसके तकाज़ों को भी व्यक्त किया। इस बात को भी स्पष्ट किया कि ईश्वर को मानने के प्रभाव जीवन पर क्या पड़ने चाहिये।

विचार करना चाहिये कि ईश्वर के बारे में जानने का हमारे पास क्या साधन है? बुद्धि, अनुभव, विज्ञान तथा अवलोकन के माध्यम से इन्सान ने ईश्वर को जानने और मालूम करने की जो भी कोशिश की, उनमें वह भटक गया। यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि ईश्वर के बारे में इन्सान को क्या जानना चाहिये और किस चीज़ की छान-बीन में नहीं पड़ना चाहिये। ईश्वर को जानने के सम्बन्ध में इनसान की असली और वास्तविक ज़रूरत क्या है। कुछ लोग दावा करते हैं कि वह ईश्वर को इसी जीवन में दिखायेंगे। यह अत्यन्त भ्रमात्मक बात है। इस अनुभव की हमें कदापि आवश्यकता नहीं है और न यह अनुभव इस जीवन में सम्भव है।

ईश्वर के बारे में जानने की जो मूल आवश्यकता है

वह यह है कि उसके गुण और उसके अधिकार क्या हैं, वह मानव से क्या चाहता है? वह किन कार्यों से प्रसन्न होता है और किन से नाराज़ ? इस संसार में इन्सान ईश्वर की इच्छा को कैसे पूर्ण कर सकता है? और परलोक में उसकी पूछगच्छ और पकड़ से कैसे बच सकता है। ईश्वर की उपासना करने तथा सम्पूर्ण जीवन उसके प्रिय कार्यों में व्यतीत करने के लिये उसका मार्गदर्शन क्या है?

एक प्रश्न यह भी है कि क्या ईश्वर इन्सान से केवल अपनी पूजा और उपासना चाहता है? इसके अतिरिक्त उसने इन्सान की व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के लिये कोई मार्गदर्शन नहीं दिया है, जैसा कि कहा गया, ईश्वर के अस्तित्व और गुणों और उसके तकाज़ों को जानने और उसकी इबादत और उपासना के तरीक़ों को मालूम करने का कोई बौद्धिक साधन हमारे पास उपलब्ध नहीं। परन्तु ईश्वर इन्सान पर बहुत दयावान है। उसने इन्सानों को इस परीक्षण में नहीं डाला, बल्कि अपने बारे में हमारे लिये जो ज़रूरी था, हमें बता दिया। उस सृष्टा के सम्बंध से जो जानकारी हमारे लिये ज़रूरी नहीं उसकी खोजबीन में हमें नहीं पड़ना चाहिये। मानव इतिहास में पैग़म्बरों और ईशदूतों का पवित्र एवं पावन समुदाय ही है जिसने ईश्वर की रस्सी एवं गुणों तथा अधिकारों को विस्तार से हमें बता दिया है। उन पुनीत हस्तियों ने इन्सानों को बताया कि उसके पास ईश्वर की ओर से वह ज्ञान आया है जो सामान्य लोगों को प्राप्त नहीं है। ईश्वर

की महान हस्ती के बारे में जो तथ्य वह बताते हैं वह सब ईश्वर की ओर से अवतरित की गयी हैं।

? कुरआन के अवतरण के दौरान आज से चौदह सौ पचास वर्ष पूर्व ईश्वर के बारे में निम्न धारणायें पायी जाती थीं।

एक धारणा यह थी कि वह सृष्टा है परन्तु सृष्टि रचना के बाद वह अलग होकर बैठ गया है। उसे बन्दों की भलाई और बुराई से कोई अभिरुचि नहीं है। वह (ईश्वर) एक खेल के तौर पर कारोबारे दुनिया को देखकर केवल आनंदित हो रहा है।

दूसरी ओर कहीं ईश्वर को एक स्वीकार किया गया, मगर उसके साझी और भागीदार बना लिये। उसके साथ अधीन कई ईश्वरों को स्वीकार कर लिया गया। अधीनस्थ ईश्वरों के अलग-अलग कार्य निर्धारित कर लिये। उदाहरण के रूप में वर्षा व हवा, पृथ्वी और आकाशों की व्यवस्था आदि-

एक विचार यह प्रस्तुत किया गया कि ईश्वर अपनी सन्तान भी रखता है। उदाहरण के रूप में फरिश्तों (देवताओं) को उसकी बेटियां मान लिया गया। कम से कम यह हुआ कि उसका एक बेटा मान लिया गया। उसे भी ईश्वर स्वीकार किया गया। गर्ज यह कि खुदा एक नहीं रहा बल्कि ईश्वरों के परिवार मान लिये गये।

एक धारणा यह थी कि ईश्वर को इन्सान जैसा समझा गया। इन्सानों जैसी उसकी प्रतिमायें एवं मूर्तियां

बना ली गयीं। हांलाकि ईश्वर को किसी ने कभी देखा ही नहीं और न यह कहा जा सकता है कि उसका कोई शरीर इन्सानों की तरह है। यह भी कहा गया कि अत्याचार एवं अन्याय, फसाद और बिगाड़ को दूर करने के लिये ईश्वर स्वयं मानव शरीर या किसी जानवर के रूप में आता है और संसार का सुधार करके चला जाता है।

ईश्वर के बारे में यह विचार प्रस्तुत किया गया कि वह अपने ही एक बन्दे (भक्त) से रात भर कुश्ती लड़ता है और सुबह के समय हार जाता है। और अपने बन्दे से कहता है अब मुझे जाने दो।

एक धारणा यह थी कि ईश्वर और बन्दों के बीच सीधे सम्पर्क नहीं हो सकता, बीच में कुछ हस्तियां हैं जिन की वह सुनता है, उनकी सिफारिशें स्वीकार करता है और उनकी खुशी और पसन्द को प्रिय रखता है।

ये और इस प्रकार की और भी धारणायें मौजूद थी। यह सभी ग़लत, अतार्किक एवं अस्वाभाविक धारणायें है। यह केवल असत्य धारणायें नहीं है, बल्कि व्यवहारिक जीवन पर उनके हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। इन धारणाओं के नतीजे में इन्सानों के अन्दर त्रुटिपूर्ण और असन्तुलित जीवनियां और विशेषतायें पैदा होती हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व में इस्लाम अकेला धर्म है, जिसमें एक ईश्वर का स्पष्ट और दिल एवं दिमाग़ को सन्तुष्ट करने वाला धारणा प्रस्तुत की गयी है। इसकी व्यापक एवं सम्पूर्ण गुणों को व्यक्त किया गया है और

व्यवहारिक जीवन में उनके तक़ाज़ों से परिचित कराया गया है। दलील की रोशनी में अनेकेश्वरवाद का भरपूर खण्डन किया गया है। क्योंकि अनेकेश्वरवाद, एकेश्वरवाद के बिल्कुल विपरीत है और एकेश्वरवाद को ठीक तौर से समझने के लिए अनेकेश्वरवाद को जान लेना ज़रूरी है (अगले पृष्ठों के इस सम्बंध से प्रकाश डाला जायेगा) इस्लाम में ईश्वर की धारणा के बारे में मौलाना सै० जलाल उद्दीन उमरी लिखते हैं–

''कुरआन इन्सान को सत्य ज्ञान प्रदान करता है। ईश्वर क्या है ? उसके गुण क्या हैं? उसकी हिदायत क्या है? उसके नियम और क़ानून क्या हैं? वह अपने बन्दों से क्या चाहता है ? कुरआन में (ईश्वर की) बन्दगी के सिधान्त मिलेगें। नैतिकता की शिक्षा मिलेगी। सांस्कृतिक एवं सामाजिक शिक्षायें तथा राजनीति के आदेश मिलेगें। इसी प्रकार आप कुरआन में स्वर्ग और नरक का ज़िक्र पायेंगे। जातियों के उत्थान और पतन की घटनायें देखेगें, परन्तु इन सबका उद्देश्य मात्र यह है कि इन्सान को ईश्वर का सत्य ज्ञान प्राप्त हो और उसकी इच्छा और अनेच्छा से परिचित हो जाये (खुदा और रसूल का तसव्वुर इस्लामी तालीमात में पेज–157) इस पुस्तक में दूसरे स्थान में लिखते हैं–

''कुरआन खोलते ही पहली सूरह, जिसका आप अध्ययन करेंगे, वह ईश्वर का परिचय इस प्रकार कराती है कि वही उपास्य है वही सबका आधार एवं स्रोत है। सारी प्रशंसायें उसी के लिये हैं। वह पालनहार है और सम्पूर्ण

जगत का पालन-पोषण कर रहा है। वह दयावान और कृपाशील है और सृष्टि उसी की दयालुता के सहारे जीवित है। वह परलोक के दिन का स्वामी है। इन्सानों का अन्तिम लेखा-जोखा उसी के हाथ में है। इसके बाद इन्सान को दावत दीं गयी है कि वह ईश्वर की ओर लपके और अपने आपको उसके सामने डाल दे। उसी की ओर बढ़े, उसी से मदद चाहे, क्यों कि यही सीधा मार्ग है। जो व्यक्ति इस मार्ग से भटक जाये उसको ईश्वर के प्रकोप से कोई चीज़ बचा नहीं सकती। संसार और परलोक में उसका असफल होना निश्चित है। इस प्रकार कुरआन की इस सूरह में ईश्वर का परिचय भी है और उसकी ओर आमंत्रण भी-(पेज- 160)

इस्लाम में ''ईश्वर'' की कल्पना से सम्बन्धित एक विस्तृत आलेख मौलाना सै० हामिद अली की पुस्तक ''एकेश्वरवाद और बहुदेववाद'' में मौजूद है। पेज नं. 49 से 54 का सारांस निम्नलिखित हैं-

ईश्वर ही सृष्टा है:-

इस्लाम में 'ईश्वर' की कल्पना के अनुसार ईश्वर ही प्रत्येक वस्तु का सृष्टा है। जिन दूसरों को लोगों ने सृष्टा मान रखा है, वे सब ईश्वर की सृष्टि है और सृष्टि, सृष्टा कैसे हो सकती है।

ईश्वर ही स्वामी है :-

ब्रह्माण्ड और उसकी सारी चीज़े का स्वामी वही अकेला है। कुरआन में कहा गया है-

‘‘ईश्वर ही की सम्पत्ति है हर वह वस्तु जो आस्मानों और ज़मीन में है’’ (सूरह बक़रा आयत–284)
‘‘प्रशंसा ईश्वर ही के लिये है जो ब्रह्माण्ड का पालनकर्ता है) (सूरह बक़रा आयत–1) पालनकर्ता वास्तव में स्वामी, पालक और शासक को कहते हैं। एक स्थान पर कुरआन में कहा गया’’

‘‘ऐ नबी (इन बहुदेववादियों) से कहो कि पुकार कर देखो अपने उन उपास्यों को जिन्हें तुम ईश्वर के सिवा उपास्य समझे बैठे हो, वे न आस्मानों में किसी कण भर चीज़ के मालिक हैं और न ज़मीन में’’ (सूरह सबा आयत–22)

ईश्वर ही शासक है–

ईश्वर जगत का सृष्टा एवं स्वामी है तो फिर ईश्वर ही को शासन का अधिकार है। उसके सिवा कोई दूसरा सृष्टि और जगत का शासक नहीं हो सकता। कुरआन में है–

तुम चाहे कोई बात व्यक्त करो या छिपाओ, इश्वर को हर बात का ज्ञान है। (सूरह अहजाब आयत–54)

दूसरी जगह कुरआन में आता है– उसके शासन में कोई साझीदार नहीं और न ऐसा ही है कि वह कमज़ोर हो कि बचाव के लिए उसका कोई सहायक हो। (सूरह बनी इस्राईल आयत 111)

ईश्वर ही पालनकर्ता है :–

कुरआन की निम्न आयतों पर विचार करें–
‘‘क्या तुमने देखा नहीं कि ईश्वर ने आस्मान से पानी

उतारा तो उसे झरनो स्रोतों और नदियों के रूप में ज़मीन में जारी कर दिया। फिर वह उससे रंग बिरंगी खेती पैदा करता है'' (सूरह जुमर आयत-21)

एक और जगह कहा गया है-

''उनसे पूछो कौन तुमको आस्मान और ज़मीन से रोजी देता है? यह सुनने और देखने की शक्तियां किसके अधिकार में है, कौन बेजान से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। कौन इस विश्व की व्यवस्था का उपाय कर रहा है। वह ज़रूर कहेंगे कि ईश्वर'' (सूरह यूनुस आयत-31) मतलब यह कि स्वास्थ्य और संतान, लाभ और हानि, ज्ञान और सम्पत्ति सारी नेमतें उसी की प्रदान की हुई हैं। उसकी अनुग्रहों और नेमतों को कोई गिन नहीं सकता।

ईश्वर ही आवश्यकताओं को पूरा करने वाला हैः-

ईश्वर सृष्टा, स्वामी, पालनहार और शासक है। सब कुछ उसी के पास है। इसलिए आवश्यकताओं को पूरी करने वाला, मुसीबतों और कष्टों को दूर करने वाला भी वही है। कुरआन में कहा गया है,

''ईश्वर के सिवा जिन्हें तुम पुकारते और पूजते हो, वह सबके सब तुम ही जैसे ईश्वर के बन्दे और मुहताज हैं'' (कुरआन सूरह आराफ आयत-194)

जिस किसी को जो कुछ मिलता है उसी के देने से मिलता है। वही ज़रूरतें पूरी करने वाला और मुश्किलों को टालने वाला है।

ईश्वर ही क़ानून बनाने वाला है :–

“इन्सान को आदेश देने और उसके लिये क़ानून बनाने का अधिकार सिर्फ ईश्वर को है। यह अधिकार ईश्वर के सिवा किसी को प्राप्त नहीं है, कुरआन में है– “आदेश केवल ईश्वर के लिये है, किसी और के लिये नहीं। उसने आदेश दिया है कि उसकी उपासना करो, किसी और की न करो” (सूरह यूसुफ, आयत–40)

बन्दगी (भक्ति) के भावार्थ में पूजा और दासता दोनों सम्मिलित हैं। दास अथवा गुलाम का काम यह है कि स्वामी की इच्छा पर चले उसका आदेश माने और उसके आदेश के विरुद्ध किसी का आदेश न माने।

जीवन एवं मृत्यु ईश्वर के हाथ में है :–

कुरआन में कहा गया है–

“तुम ईश्वर की आज्ञापालन से कैसे इनकार करते हो हालांकि तुम्हारा अस्तित्व ही नहीं था। उसने तुम्हे जीवन प्रदान किया, फिर वह तुम्हे मौत देगा, फिर वह तुम्हे जिन्दा करेगा फिर तुम उसी के पास पलटाये जाओगे” (सूरह बकरा आयत–28)

लाभ एवं हानि ईश्वर के हाथ में है :–

कुरआन में है– “और उन्होंने ईश्वर के सिवा दूसरे खुदा बना रखे हैं। जो कुछ भी पैदा नहीं करते और स्वयं पैदा किये जाते हैं। उनके हाथ में अपना लाभ तथा हानि भी नहीं है। न मृत्यु न जीवन, न पुनः उठाया जाना उनके बस में है” (सूरह फुरकान आयत–3)

मुहम्मद सल्ल० का कथन है कि जब मांगो तो ईश्वर से मांगो और सहायता चाहो तो ईश्वर से चाहो और विश्वास रखो, यदि सब लोग मिलकर तुम्हे कोई लाभ पहुँचाना चाहें तो कदापि न पहुँचा सकेगे मगर जितना कि ईश्वर ने तुम्हारे हक़ में लिख दिया है। और अगर सारे लोग इकट्ठा होकर तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहे तो कदापि न पहुँचा सकेगें मगर जितना कि ईश्वर ने तुम्हारे हिस्से में लिखा दिया है। (तिर्मिज़ी)

ईश्वर ही हर वस्तु का ज्ञान रखता है :–

कुरआन में कहा गया है :–

''तुम चाहे चुपके से बात करो या ऊँची आवाज़ से ईश्वर के लिये समान है वह तो दिलों का हाल तक जानता है। क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया है हालांकि वह सूक्ष्मदर्शी है और खबर रखने वाला है'' (सूरह मुल्क आयत–13–14)

क़ुरआन में एक और स्थान पर है :–

''और उसी के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियां हैं जिन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता। मगर सिर्फ वह जल और थल की हर चीज़ वह जानता है, जो पत्ता भी गिरता है उसे जानता है और ज़मीन के अन्धकार मय पर्दो में कोई दाना गिरता है और जो गीली और सूखी चीज़ गिरती है, वह सब ईश्वर के स्पष्ट रिकार्ड में है। (सूरह अनआम आयत–59)

ईश्वर का कोई समकक्ष नहीं :–

जगत की समस्त वस्तुयें ईश्वर की रचनाये हैं। इसलिए जगत की कोई वस्तु ईश्वर के समकक्ष नहीं हो

सकती, क़ुरआन में है–
‘‘संसार में कोई चीज़ उसके सदृश नहीं’’
(सूरह शूरा आयत–11)
दूसरी आयत–
‘‘और कोई उसके समकक्ष नहीं’’ (सूरह इखलास आयत–4)

ईश्वर के सामने कोई सिफारिश करने वाला नहीं :–

संस्तुति या सिफारिश आमतौर पर इसलिए की जाती है कि अपराधी को अपराध के दंड से बचा लिया जाये। या किसी व्यक्ति को वह वस्तु दिलवा दी जाये, जिसका वह पात्र नहीं है। यह खुली हुई बेइमानी है। किसी ईमानदार व्यक्ति से यह आशा नहीं रखनी चाहिये कि वह इस प्रकार की सिफारिश करेगा या स्वीकार करेगा। परन्तु कुछ लोग अपने हाथों से बनाये हुये भगवानों के बारे में यह धारणा रखते हैं कि ईश्वर के समक्ष उनकी अनुचित सिफारिश करेंगे या ईश्वर की पकड़ से उन्हें बचा लेंगे, हालांकि ईश्वर के यहां इस प्रकार की संस्तुति सम्भव नहीं है। वह न किसी का दबाव स्वीकार करता है और न ग़लत फ़ैसले करता है और न उसे धोखा दिया जा सकता है। वह अपने पूर्ण ज्ञान की रोशनी में सही फ़ैसले करता है। क़ुरआन में कहा गया है–

‘‘ईश्वर के सामने ज़ालिमों (बाग़ियों) का न कोई चाहने वाला दोस्त होगा और न कोई सिफारिश करने वाला जिसकी बात मानी जाये। वह निगाहों की आपराधिक शरारतों और दिलों के छुपे इरादों तक से परिचित है, ओर वह सही फैसला ही फरमाता है’’ (सूरह मोमिन, आयत–8–20)

अनेकेश्वरवाद सबसे बड़ा अपराध है

ईश्वर को मात्र एक मानना पर्याप्त नहीं है। ईश्वर सृष्टा, स्वामी, पालनकर्ता, अन्नदाता तथा उपास्य है, उसके सिवा सभी दूसरे ईश्वर जो इन्सानों ने स्वयं गढ़ लिये हैं उनका इनकार भी ज़रूरी है।

ईश्वर को एक मानना, मगर दूसरों को उसकी हस्ती, गुणों और अधिकारों में साझी बना लेना सबसे बड़ा गुनाह है। इसी को बहुदेववाद कहते हैं। एकेश्वरवाद यह है कि ईश्वर को एक मानकर उसकी इबादत और उपासना की जाये। दूसरी ओर ईश्वर के सिवा सभी का इनकार करना और उनकी भक्ति और आज्ञापालन से पूर्णरूप से बच जाना एकेश्वरवाद में शामिल है।

बहुदेववाद (शिर्क) क्या है :–

ईश्वर अपने अस्तित्व, गुणों, अधिकारों तथा स्वामित्व में भी अकेला है। यानी वह इन सब पहलुओं से अकेला है। उसका कोई साझी नहीं है, उसको एक मानने का अर्थ यह है कि उसके सिवा किसी भी दूसरे ईश्वर या ईश्वरीय गुणों वाली किसी और हस्ती का इनकार किया जाये। वास्तव में उसके सिवा जिनको ईश्वर या ईश्वरीय गुणों वाला बताया जाता है, वास्तव में उनमें ईश्वरीय गुणों का कोई गुण है ही नहीं। बहुदेववाद महा पाप ही नहीं, एक बहुत बड़ा झूठ भी हैं। इस झूठ पर जीवन की बुनियाद रखने का अर्थ है सत्य मार्ग से भटक जाना।

ईश्वर की हस्ती में, उसके गुणों, अधिकारों एवं स्वामित्व में किसी भी दूसरी जीवित या निर्जीव हस्ती या किसी अन्य चीज़ को साझी बनाना और सम्मिलित करना बहुदेववाद है। कुरआन ने बहुदेववाद को सबसे बड़ा पाप बताया है और उसे सबसे बड़ा अन्याय कहा है। बहुदेववाद की माफी नहीं होगी। ईश्वर अपनी हस्ती और गुणों और अधिकारों में मात्र अकेला और तनहा है।

कुरआन में है–

''कहो वह अल्लाह है यकता, अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान और कोई उसका समकक्ष नहीं''

(सूरह इखलास आयत–1–4)

ईश्वर को एक मानकर कितने ही लोगों ने किसी को उसका बेटा, किसी को उसकी बेटियां और किसी को उसकी माँ करार दिया, जबकि वास्तविक रूप में उसकी कोई सन्तान नहीं है और न वह किसी की संतान है। वह अनादि और अनन्त है। वही अकेला बाकी रहने वाला है उसका कोई परिवार और जाति नहीं। वह सभी प्रकार की दुर्बलताओं से मुक्त है। उसे किसी की सहायता और सहारे की आवश्यकता नहीं है। इन्सान समेत सारी सृष्टि उसी की मुहताज है और किसी के सहारे की ज़रूरत मन्द है। कुरआन की निम्न आयतों के अनुवाद पर विचार कीजिये–

''अल्लाह तो उसके लिये सबसे उच्चतर गुण हैं वही तो सबसे प्रभुत्वशाली तत्वदर्शिता में पूर्ण है''

(सूरह नहल आयत–60)

‘‘अल्लाह बस शिर्क (साझीदार बनाने) ही को माफ नहीं करता। इसके सिवा दूसरे जितने गुनाह है वह जिसके लिये चाहता है, माफ कर देता है। अल्लाह के साथ जिसने किसी और को साझी ठहराया उसने तो बहुत ही बड़ा झूठ रचा और बड़े सख्त गुनाह की बात की’’

(सूरह निसा आयत–48)

‘‘वही एक आसमान में भी ईश्वर है और ज़मीन में भी ईश्वर। और वही तत्वदर्शी और सर्वज्ञ है’’

(सूरह जुखरूफ आयत–84)

‘‘अगर आसमान और ज़मीन में एक अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य भी होते तो (ज़मीन और आसमान) दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः पाक है अल्लाह, सिंघासन का अधिकारी उन बातों से जो यह लोग बना रहे हैं’’

(सूरह अंबिया आयत–22)

‘‘फिर क्या वह जो पैदा करता है और वे जो कुछ भी पैदा नहीं करते दोनों समान हैं ? क्या तुम होश में नहीं आते’’

(सूरह नहल, आयत–17)

‘‘और वे दूसरे हस्तियां जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं वह किसी चीज़ के भी सृष्टा नहीं है बल्कि खुद पैदा की हुई हैं। निर्जीव है ना कि जीवित और उनको कुछ मालूम नहीं है कि उन्हें कब दुबारा जीवित करके उठाया जायेगा’’ (सूरह नह्ल आयत– 20–21)

‘‘क्या उसे छोड़ कर उन्होंने दूसरे पूज्य बना लिये है ऐ नबी इनसे कहो कि लाओ अपना प्रमाण’’ (सूरह अंबियाा आयत–24)

यह सत्य है कि ईश्वर ने अपनी कायनात और सृष्टियों का प्रबन्ध अलग-अलग सहायकों के हवाले नहीं किया है। उसे सहायक और मदद्गार की आवश्यकता कदापि नहीं है। यह तो लोगों की बनायी हुई धारणायें हैं। जैसे संसार में वह देखते हैं कि किसी हुकूमत में प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति की सहायता के लिये सहायक मंत्रियों की एक टीम रहती है, तो इसी प्रकार ईश्वर के बारे में अनुमान करते हैं। ईश्वर उन सारी दुर्बलताओं से मुक्त है। किसी की मदद का मुहताज होना तो दोष और दुर्बलता है। ईश्वर प्रत्येक दुर्बलताओं और प्रत्येक दोषों से मुक्त है और सबसे निस्पृह है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तथा समस्त सृष्टियों की उत्पत्ति उसकी व्यवस्था और प्रबन्धन, पालन-पोषण, देख-रेख और सुरक्षा में किसी की साझेदारी का कोई सुबूत और दलील नहीं है। मौलाना सै० जलाल उद्दीन उमरी लिखते हैं-

''खुदा के एक होने की दलील यह है कि इस ब्रह्माण्ड में उसी का इरादा पूरा हो रहा है, जिस कोने में देखो, उसी का आदेश चलता है, पृथ्वी, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, दिन व रात प्रत्येक वस्तु पर उसी की सत्ता है और किसी में उसकी अवज्ञा की शक्ति नहीं है। परन्तु यदि किसी का यह विचार है कि ब्रह्माण्ड के बहुत से ईश्वर हैं तो आखिर ब्रह्माण्ड के किस भाग में उनकी हुकूमत है? और कौन सी चीज़ उनके आदेशों के अधीन है ? और वह शासन और सत्ता हमें दिखाई क्यों नहीं पड़ती।

(खुदा और रसूल का तसव्वुर पेज-258)

बहुदेववाद (शिर्क) दरअस्ल बाप-दादा के मार्ग पर आँखें बन्द करके चलने का नाम है। कुरआन में बताया गया है:

“तू उन पूज्यों की ओर से किसी शक में न रहे जिनकी यह लोग पूजा कर रहे हैं। यह तो उसी तरह पूजा पाठ किये जा रहे हैं जिस तरह पहले इनके बाप-दादा करते थे”

(सूरह हूद आयत-109)

“और ईश्वर के कुछ समकक्ष ठहरा लिये हैं ताकि वह उन्हें अल्लाह के मार्ग से भटका दें। इनसे कहो अच्छा मज़े कर लो अन्तः तुम्हे पलट कर जाना नरक में ही है”

(सूरह इब्राहीम आयत-30)

यह बहुदेववाद का कितना भयानक परिणाम है ! मौलाना बहुदेववाद के सम्बंध में और आगे लिखते हैं-

“यदि यहां बहुत से ईश्वर होते तो इसका प्रमाण हमें संघर्ष एवं टकराव के रूप में मिलना चाहिये था। एक ईश्वर की इच्छा दूसरे ईश्वर की इच्छा से टकराती, एक ईश्वर जो काम करना चाहता, दूसरा उसके मार्ग में बाधा उत्पन्न करता, क्योंकि ऐसा कोई उपाय नहीं है कि ब्रह्माण्ड पर शक्तिशाली तथा सामर्थ्यवान ईश्वरों की सत्ता हो और उनके मध्य मतभेद और टकराव न पाया जाय। ईश्वर वह है जिसकी इच्छा इस जगत में पूरी हो। अगर उसकी इच्छा पूरी नहीं होती है तो यह उसके ईश्वर होने का इनकार है। ब्रह्माण्ड के बहुत से ईश्वर हैं तो उनके विभिन्न और एक-दूसरे के विरोधी इरादे एक ही समय में यहां पूरे होने चाहिये थे, जिसका परिणाम निश्चित रूप से बिगाड़ और

फ़साद के रूप में प्रकट होता। परन्तु स्थिति यह नहीं है बल्कि ब्रह्माण्ड में प्रत्येक और सकुशल प्रबन्धन और सामंजस्य पाया जाता है। ब्रह्माण्ड में टकराव और विरोध का न होना कुरआन के निकट स्पष्ट रूप से ईश्वर के एक होने का प्रमाण है।

कुरआन में बताया गया है -

''ईश्वर ने किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया है और कोई दूसरा खुदा उसके साथ नहीं है। अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और फिर वे एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते।'' (सूरह मोमिनून आयत-91)

इन वाक्यों में (कि ईश्वर उनके शिर्क से मुक्त है) उस वास्तविकता की ओर संकेत है कि इन्सान बहुदेववाद से उसी समय बच सकता है जबकि वह ईश्वर की सही धारणा रखता हो। इसलिए जो लोग इस जगत में अनेक ईश्वरों की ईश्वरत्व स्वीकार करते हैं, उनके दिमाग़ में वास्तव में ईश्वरत्व का अत्यंत तुच्छ एवं घटिया धारणा होता है। (पेज नं. 258-260)

बहुदेववाद से सम्बन्धित कुछ प्रश्न-

लोगों में बहुदेववाद की शुरूआत इस प्रकार हुई कि सत्यवादी और नेक लोगों से प्रेम और श्रृष्टा में आगे बढ़ जाने के कारण उनकी मूर्तियां बना ली गयीं ताकि उनको याद रखा जाये, परन्तु बाद की नस्लों में व्यहारिक रूप से उनकी पूजा और उपासना होने लगी। फिर उन नेक और सत्यवादी विभूतियों को ईश्वरत्व (खुदाई) में शामिल कर

दिया। यद्यपि उन्होंने कभी यह नहीं कहा था कि वह खुदाई में साझीदार है या ईश्वर ने अपनी कुछ शक्तियों और अधिकारों को उनकी ओर हस्तान्तरित किया हो। स्वयं उन हस्तियों ने अपने जीवन में एक ईश्वर की सम्पूर्ण दासता और आज्ञापालन किया था, लेकिन लोगों ने उन हस्तियों को (इन्सान होने के बावजूद) खुदाई के स्थान पर बिठा दिया। जबकि इन महापुरुषों ने सदैव खुद को ईश्वर के बन्दों में ही शामिल किया। विचारणीय बात यह है कि वह ईश्वर की रचना और बन्दे होते हुये खुदाई में कैसे साझीदार हो सकते हैं ?

जो इन्सान अपने जन्म से पहले माता के पेट में नौ महीने रहा हो, बच्चा बनकर पैदा हुआ हो, नौजवानी और बुढ़ापे की मन्ज़िलों से गुज़र कर या जवानी ही में उसकी मृत्यु हो गयी, वह अपने जीवन में दुख झेलता रहा हो, बीमारी, सुख-दुख और घटनाओं से उसका सामना पड़ता रहा हो, स्पष्ट है कि इन सारी परिस्थितियों में भी वह अपना कोई अधिकार नहीं रखता था, बल्कि ईश्वर की महिमा के आगे बेबस और विवश था। इन सब दुर्बलताओं के बावजूद वह ईश्वर या खुदाई में साझीदार कैसे हो गया। वह खुदाई या ईश्वरत्व में शामिल होता तो कम से कम अपनी मौत को टाल सकता था।

1- क्या ईश्वर ने कहीं यह बताया है कि अपनी सहायता और जगत के प्रबन्धन एवं संचालन के लिए उसने सहायक ईश्वर नियुक्त कर रखे हैं। इसी प्रकार क्या उसने यह बताया है कि उसने यह और यह अधिकार

अपने सहायक ईश्वरों को सौंपे हैं। यह बातें किस धार्मिक ग्रन्थ में अंकित है और उनका तर्क क्या है ?

2– कुछ लोगों का तर्क यह है कि सामान्य लोग, ईश्वर की सीधे उपासना नहीं कर सकते या उसकी कल्पना उनके लिये दुर्लभ है। इसीलिए उसकी मूर्ति या किसी और प्रतिमा आदि के रूप में उसकी पूजा व उपासना की जाती है। इस तर्क पर विचार करने की आवश्यकता है। ईश्वर की जो भी मूर्ति, प्रतिमा या कोई और रूप मान लिया गया है आमतौर से इन्सानों या जानवरों की तरह है। तो क्या ईश्वर इन्सान या जानवर है ? इस सम्बंध में मूल प्रश्न यह भी है कि ईश्वर ने ऐसा करने का आदेश भी दिया है? कहां दिया है? उसका सुबूत और दलील क्या है? क्या ईश्वर इस बात को सहन कर सकता है कि अपनी पूजा–अर्चना और बन्दगी का तरीक़ा तो इन्सानों को न बताये, लेकिन इतने कठोर परीक्षण में उन्हें डाल दे कि इन्सान यह सारे तरीके खुद ही मालूम करे और जिस प्रकार चाहे वैसे उसकी पूजा और उपासना कर ले। फिर मात्र पूजा उपासना पर्याप्त नहीं, बल्कि इन्सान का अपनी व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में ईश्वर के आदेशों पर अमल करना भी ज़रूरी है और पूरे जीवन को उसकी पूर्ण इच्छा के अधीन कर देना अनिवार्य है। वास्तव में यह इबादत (उपासना) का सही अर्थ है, जिसके लिए इन्सान को पैदा किया गया है।

एक महत्वूपर्ण मार्गदर्शन कुरआन ने दी है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर पर ईमान लाकर उसकी

सीधे तौर पर बिना किसी माध्यम के इबादत और उपासना कर सकता है और उससे प्रार्थनायें कर सकता है। ईश्वर उसकी उपासना और प्रार्थनाओं को जानता है और उन्हें स्वीकार भी करता है।

3- एक ईश्वर के सिवा जिनको भी ईश्वर मानकर खुदाई (ईश्वरत्व) में साझीदार बनाकर उनकी इबादत और उपासना की जा रही है, उन साझीदारों के रूप नारी और पुरुष दोनों की तरह का मान लिया गया है। ईश्वर क्या इन्सान की तरह मर्द और औरत, जैसे शरीर रखता है? फिर विडम्बना यह है कि उन सहायक ईश्वरों की ओर सारी इन्सानी कमज़ोरियाँ भी सम्बद्ध कर दी गयी हैं। इस सम्बंध में बहुत सी अश्लील कहानियां व्यक्त की जाती हैं। इन सारी दुर्बलताओं के साथ यह साझीदार या मानव निर्मित ईश्वर क्या हमारे लिये आदर्श और नमूना हो सकते हैं? उनका अनुसरण कैसे किया जा सकता है।

4- सम्पूर्ण विश्व में बहुदेववादियों ने ईश्वर और साझीदारों के अलग-अलग नाम रखे हैं और उन की विभिन्न कहानियां बना ली हैं। यह विवरण एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। उदाहरण के रूप में सृष्टि के जन्मदाता के बारे में भारत, चीन, यूनान, रोम, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया आदि के बहुदेववादी धारणायें बिल्कुल अलग-अलग हैं। इन्सानों के उपासकों की हस्ती एवं गुण दुनिया के सारे बहुदेववादियों के निकट एक समान नहीं है। सबको यहां अलग-अलग धारणायें हैं, जो परस्पर विपरीत हैं। तो प्रश्न

यह है कि आखिर इन सबके मध्य वास्तविक ईश्वर और उपास्य किसे कहा जाये ? ईश्वर तो वह हो सकता है जो वास्तव में सम्पूर्ण जगत और समस्त सृष्टियों का अकेला ही सृष्टा और उपास्य है। विश्व के विभिन्न देशों में उसका नाम वहां की भाषा में लिया जायेगा, लेकिन वह हक़ीक़त में एक ही हस्ती है और उसके गुण एक समान हैं।

5- सामान्य परिस्थितियों में बहुदेववादी विश्व में अपनी धारणाओं के तहत बनाये हुये बहुत सारे खुदाओं को स्वीकार कर उनकी पूजा और उपासना में लगे रहते हैं, लेकिन बड़ी मुसीबतों और आफ़तों के समय वे उन सब को भूल कर एक सच्चे और वास्तविक खुदा को मदद के लिये पुकारते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हर इन्सान की प्रकृति एकेश्वरवाद पर आधारित है। उसकी आत्मा की गहराइयों में एक वास्तविक ईश्वर और सच्चे उपास्य की धारणा मौजूद है। उसी को पुकारना उसी की ओर से अपने स्थित की बेहतरी की आशा रखना और उसी से आस और आशायें बांधना, यह मानव प्रकृति का ठीक तकाज़ा है। इसके विपरीत ईश्वर के ऐसे सहायक और साझीदार बना कर लेना, जिनकी उसने कोई सूचना नहीं दी है और उनको पुकारना, उनसे प्रार्थना करना आदि अस्वाभाविक और अबौद्धिक कार्य है। यह एक मरीचिका के समान है, जिसमें कोई व्यक्ति पानी की खोज में मारा मारा दौड़ता रहे, परन्तु उस स्थान पर पहुँचे तो एक बूंद पानी न मिलें।

सम्पूर्ण विश्व के बहुदेववादी एक अवधि तक

अपनी–अपनी धारणाओं के अनुसार गढ़े हुये ईश्वरों को मानकर उनकी पूजा, उपासना करते हैं परन्तु एक अवधि व्यतीत हो जाने के बाद उनको छोड़कर दूसरे ईश्वर बना लेते हैं और उनकी पूजा और उपासना करने लगते हैं। क्या इस प्रकार ईश्वर निर्धारित करने और एक अवधि के बाद उनको खुदाई के स्थान से हटा कर उनके स्थान पर दूसरे ईश्वरों को निर्धारित करने का अधिकार इन्सानों को प्राप्त है। जबकि वास्तविकता यह है कि जिनको ईश्वर मानकर पूजा और उपासना की जाती है, फिर उनको भुला कर दूसरे ईश्वरों की उपासना होने लगती है। वास्तव में उनमें कोई भी ईश्वर नही है। एक और पहलू विचारणीय है कि बहुदेववादी धारणाओं में ईश्वर से सम्बन्ध मात्र पूजा और उपासना की सीमा तक ही रहता है। इस सीमित क्षेत्र के बाद सम्पूर्ण जीवन में इन्सान ईश्वर का बाग़ी और अवज्ञाकारी हो जाता है। यानी इन्सान के सम्पूर्ण जीवन के लिये मार्गदर्शन, सफलता की प्राप्ति और पारलौकिक मुक्ति के सम्बंध में ये ईश्वर कोई मार्गदर्शन नहीं करते।

वेदों में बहुदेववाद की मनाही :–

हिन्दू धर्म की बुनियाद वेदों पर है, यद्यपि उनमें कहीं भी हिन्दू धर्म का शब्द नही आया है। चार वेद प्रसिद्ध हैं ऋगुवेद, यजुर्वेद, अथर्वेद और सामवेद।

इन वेदों में ऋगुवेद सबसे प्राचीन है। वेदों की मूल शिक्षा एक ईश्वर को मानने, उसी की पूजा उपासना और सम्पूर्ण दासता ग्रहण करने और उसकी अवज्ञा से बचकर जीवन व्यतीत करने की थी। ईश्वर को छोड़कर किसी भी दूसरी जानदार या बेजान चीज़ें जैसे सूर्य, चन्द्रमा, तारे,

वृक्ष, पत्थर आदि को किसी भी रूप में पूजने से वेदों में सख्ती से मना किया गया है। अथर्वेद के निम्न उद्धरण पर विचार कीजिये।

''वह परमेश्वर दूसरा है न तीसरा और न ही चौथा उसे कहा जा सकता है, वह पांचवा, छठा और सातवां भी नहीं है। वह आठवां, नवां, दसवा भी नहीं है, वह अकेला है। वह उन सबको अलग-अलग देखता है, जो सांस लेते हैं, या नहीं लेते। सारी शक्तियां उसी की हैं। वह बड़ा शक्तिशाली है, जिसके नियन्त्रण में सम्पूर्ण जगत है। वह एक है। उसके समान दूसरा कोई नहीं। निश्चित रूप से वह एक ही है। (अथर्वेद- 16—4—13)

यजुर्वेद में निम्नलिखित उद्धरण मिलता है-

''वह लोग अंधकार युक्त गहराइयों के अंधेरे में डूब जाते हैं, जो पदार्थ जैसे अग्नि, मिट्टी और जल आदि के पुजारी हैं। वह इससे भी अधिक अंधकार में डूबते हैं, जो पदार्थ से निर्मित वस्तुयें जैसे- पेड़-पौधे और मूर्तियों आदि की पूजा में लिप्त हैं। (यजुर्वेद- 9—40)

ऋगुवेद में निम्न शिक्षा मिलती हैं-

''उसके अतिरिक्त किसी की उपासना न करो। (मन्डल 10 सूक्ति 121 मंत्र 3)

''उसी से आकाश में मज़बूती तथा पृथ्वी में सुदृड़ता है उसी के कारण प्रकाश का राज्य और आकाश, मेहराब (Arch) के रूप में टिका हुआ है। वातावरण के पैमाने भी उसी के लिये हैं। उसे छोड़कर हम किस ईश्वर की प्रशंसा करते हैं और चढ़ावे चढ़ाते हैं। (ऋगुवेद- 10-121, 5)

कुरआन पर ईमान लाना अनिवार्य है

क्या कुरआन के अलावा दूसरे धर्म ग्रन्थों जैसे वेदों या बाइबिल को मानकर जीवन व्यतीत करना सांसारिक कल्याण एवं पारलौकिक मुक्ति के लिये पर्याप्त नहीं ? इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर भावनाओं और पूर्व प्रचलित विचारों से ऊपर उठकर ठण्डे दिल व दिमाग़ से चिन्तन करने की आवश्यकता है। इसी चिन्ता के फलस्वरूप सत्य की खोज में सफलता प्राप्त होगी। कुछ विद्वानों और धर्म गुरूओं का विचार है कि कुरआन से पूर्व अवतरित धर्म ग्रन्थ अपनी वर्तमान स्थिति में ईश-वाणी ही की हैसीयत रखती हैं। उनमें कुरआन ही के समान एक ईश्वर को स्वीकार करने और उसकी दी हुई शिक्षाओं पर अमल करने का आमंत्रण दिया गया है। इसलिए पूर्व धर्म ग्रन्थों को मानकर उनकी शिक्षाओं पर अमल करना सफलता और मुक्ति के लिये पर्याप्त है।

उनका यह भी विचार है कि कुरआन पर ईमान लाना, उसकी शिक्षाओं पर अमल करना, यहां तक कि अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाना कोई ज़रूरी नहीं है। हालांकि जो लोग कुरआन को ईश्वरी-ग्रन्थ और मुहम्मद सल्ल० को अन्तिम ईशदूत मानकर जीवन व्यतीत करते हैं वह भी सत्य मार्ग पर हैं और वे भी सफल होंगे। यह एक संवेदनशील और महत्वपूर्ण बहस है।

आज विश्व में जिनको धार्मिक ग्रन्थ कहा जाता है,

उनमें प्रमुख ग्रन्थ वेद, गीता, ज़न्द अवेस्ता (पारसी धर्म ग्रन्थ) बाइबिल और क़ुरआन आदि हैं। धार्मिक ग्रंथ और भी हैं, लेकिन उन सभी का उल्लेख लम्बा हो जायेगा। इसलिये उनमें केवल वेद, बाइबिल और क़ुरआन पर विचार करना उनकी अपेक्षा आसान है।

वेदों में ऋगुवेद सबसे प्राचीन है। इसके बाद अर्थवेद, यजुर्वेद और सामवेद हैं। वेदों की रचनाकाल कम से कम साढ़े तीन हज़ार वर्ष पूर्व का है। कुछ विद्वान इससे भी अधिक प्राचीन बताते हैं। हिन्दु धर्म के विद्वान खुद इस बात पर सहमत नहीं हैं कि वेद ईश्वरीय ग्रन्थ है। बाइबिल का काल कम से कम दो हज़ार वर्ष पुराना है। एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि यह पुस्तकें सुरक्षित नहीं रही हैं। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि उनकी मूल शिक्षायें क्या थीं ? क्या वह शिक्षायें प्रत्येक काल के लिये थीं। वर्तमान परिवेश में धर्म और मानव जीवन के सम्बंध से उत्पन्न होने वाले प्रश्नों का उत्तर क्या इन ग्रन्थों में मौजूद है? क्या ये ग्रन्थ मतभेदों और विरोधाभासों से मुक्त हैं? जिस ग्रन्थ या वाणी में मतभेद और विरोधाभास पाया जाये वह ईशवाणी या ईश-ग्रन्थ नहीं हो सकता। मतभेद और विरोधाभासों के मौजूद होने की स्थिति में इन्सान इस दुविधा में पड़ जाता है कि किस बात को माने और किस को न मानें।

एक और पहलू से विचार करें कि आज धर्म के हवाले से इन्सान को मात्र आस्था एवं विश्वास की

आवश्यकता नहीं है, बल्कि धर्म ऐसा होना चाहिये, जो जीवन एवं जगत के बारे में उत्पन्न होने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देता हो। उसका दृष्टिकोण बुद्धि और स्वभाव को अपील करे और इन्सान के अपने अस्तित्व एवं जगत में फैली हुयी निशानियों के अनुसार हो। इसी के साथ यह आवश्यक है कि धर्म, व्यक्ति, परिवार और समाज को बनाने-संवारने का कार्य करे और पूर्ण मार्गदर्शन की आवश्यकता को पूरा करने वाला हो, यानी धर्म को वास्तव में सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था और आचार-संहिता होना चाहिये।

सभी धर्म-ग्रन्थों का सम्मान करते हुये यह बात अवश्य कहनी है कि वेद और बाइबिल दोनों इस बारे में एक ही स्थित रखते हैं। यानी उनमें कोई जीवन-व्यवस्था या सम्पूर्ण जीवन-विधान नहीं पाया जाता। इसीलिए अनुमान लगाया जा सकता है कि वेदों और बाइबिल की शिक्षा एक विशेष काल के लिये थी। सम्भव है कि ये पुस्तकें ईश्वरीय मार्गदर्शन पर आधारित रही हों। परन्तु आज वह परिवर्तनों, बदलावों, मतभेदों तथा विरोधाभासों के कारण जीवन का मार्गदर्शन करने में असमर्थ है। विश्व व्यापी और शाश्वत मार्गदर्शन की सामग्री उनमें नहीं मिलती और एक सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का मानचित्र नहीं पाया जाता। हाँ कुछ नैतिक शिक्षायें मिलती हैं। लिहाज़ा उन ग्रन्थों का सम्मान तो करना चाहिये, परन्तु क़ुरआन के बाद वे पुस्तकें निरस्त हो चुकी हैं। जीवन के मार्गदर्शन का

सामान, जीवन की समस्याओं का हल और पारलौकिक मुक्ति का मार्ग केवल कुरआन में मिलेगा।

एक महत्वपूर्ण सच्चाई यह कि कुरआन मजीद को मानने में पिछली धार्मिक पुस्तकों को मानना भी शामिल है। इसी प्रकार कुरआन मजीद के इनकार का अर्थ यह होगा कि पिछली धार्मिक पुस्तकों को न माना जाये। बाइबिल में New Testament और Old Testament दोनों सम्मिलित हैं। इनमें कोई पूर्ण जीवन विधान नहीं पाया जाता, क्यों कि वर्तमान ईसाई धर्म के संस्थापक सैन्टपाल ने शरीअत (विधान) को निरस्त ठहरा दिया था। इसलिए जीवन व्यतीत करने के लिये ईश्वरीय आदेशों की बुनियाद ही खत्म हो गयी। आज विश्व में सत्तर से अधिक अलग-अलग बाइबिलें पाई जाती हैं जिनको विभिन्न मसीही समुदाय असली बाइबिल मानते हैं और दूसरी बाइबिल का इन्कार करते हैं। कुरआन के अतिरिक्त अधिकतर धार्मिक ग्रन्थों में सन्यास, ब्रह्मचर्य और सन्यासी जीवन व्यतीत करने को आदर्श कहा गया है। स्पष्ट है कि यदि सारे लोग सन्यासी हो जाये तो परिवार, समाज, संस्कृति एवं सभ्यता शेष नहीं बचेंगी। दूसरी ओर कुछ धार्मिक विचारों में कठोर भौतिकतवाद और सांसारिकता का रुझान भी मिलता है। इस प्रकार इस स्थिति में धर्म-परायणता और ईशभक्ति की गुन्जाइश कहा बाकी रह सकती है ?

कुरआन के बारे में विचार करे, आज से एक हज़ार चार सौ पचास वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर अरब

के मक्का नगर में क़ुरआन अवतरित हुआ। 23 वर्षों में थोड़ा-थोड़ा करके उसका अवतरण पूर्ण हुआ। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने ईश्वर के अन्तिम ईशग्रन्थ के रूप में इसको प्रस्तुत किया। उनके जीवन में ही उसका संकलन पूर्ण हो गया। क़ुरआन मजीद अपने आपको ईशवाणी के रूप में प्रस्तुत करता है। यह घोषणा कि क़ुरआन कोई मानव रचना नहीं है, बल्कि मानवता के नाम ईश्वर का संदेश और मार्गदर्शन है, क़ुरआन मजीद में बार-बार दुहराया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की कही हुई बातों को या उनके अमल को हदीस कहा जाता है। क़ुरआन मजीद प्रमाणिक और सुरक्षित है।

क़ुरआन मजीद पिछली पुस्तकों की पुष्टि करता है। पिछली पुस्तकों में जो सत्य प्रस्तुत किया गया था वह लुप्त होकर रह गया और बदलाव का शिकार होने के कारण सत्यता गुम हो गयी। इसलिए क़ुरआन मजीद को कसौटी कहा गया। यानी क़ुरआन मजीद पिछली पुस्तकों की शिक्षाओं को परखने के लिये कसौटी भी है और मार्गदर्शक भी है। क़ुरआन मजीद अन्तिम ग्रन्थ होने की वजह से समस्त मानव जाति के लिए है। इस ग्रन्थ में बार-बार यह बात बताई गयी है कि समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन अब केवल क़ुरआन के माध्यम से सम्भव है।

क़ुरआन की एक विशेषता यह है कि इसका अवतरण किसी विशेष जाति, काल या वर्ग के लिये नहीं हुआ है, बल्कि इसमें रहती दुनिया तक सारे इन्सानों के

मार्गदर्शन की सामग्री मौजूद है। इसका केन्द्री विषय इन्सान है। यानी वह इन्सान के कल्याण एवं मुक्ति का मार्ग खोलता है। विफलता और नरक की यातना से बचने के लिये उसका मार्गदर्शन करता है। कुरआन बुद्धि और स्वभाव को आधार बनाता है, अपने वजूद से लेकर जगत में फैली हुयी अनगिनत निशानियों पर विचार करने के उपरान्त सत्य सन्देश को स्वीकार करने का आमन्त्रण देता है। इसकी हर बात तर्कसंगत है। वह आँखे बन्द करके अपनी किसी शिक्षा या मार्गदर्शन को स्वीकार करने के लिये नहीं कहता। विवेक से काम लेने तथा गौर करने के बाद निर्णय की शिक्षा देता है। कुरआन में कहीं भी कोई मतभेद और विरोधाभास नहीं पाया जाता। इसमें एक मज़बूत और सच्चा-विश्वास, उपासना की सुव्यवस्थित पद्धति, नैतिकता, जीवन चरित्र और जीवन सम्बंधी समस्त मामलों में समुचित और संतुलित मार्गदर्शन मिलता है। इतना ही नहीं बल्कि मानव जीवन के सामूहिक विभागों जैसे शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता राजनीति व अर्थ व्यवस्था, सामाजिक जीवन तथा अन्य जीवन विभागों के बारे में इसमें विस्तृत मार्गदर्शन मौजूद है। कुरआन मानव जीवन की समस्याओं का हल प्रस्तुत करता है। कुरआन के आधार पर 'मुहम्मद' सल्ल० ने व्यक्ति, परिवार, समाज और व्यवस्था का निर्माण किया।

अरब में हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने एक पूर्ण क्रान्ति पैदा कर दिया। सारी छोटी-बड़ी बुराइयों से समाज मुक्त हो गया। शराब, जुल्म, व्यभिचार, बच्चियों की अकारण हत्या,

चोरी, लूटमार, हत्या और खून खराबा आदि बुराइयों को आज सभ्य सरकारें करोडों, अरबों रुपये खर्च करके और पुलिस, जेलखानों और न्याय-व्यवस्था का प्रबन्ध करके भी इन बुराइयों को मिटाने में विफल हैं। इतना ही नहीं बल्कि निर्धनता, बीमारी, अज्ञानता, भुखमरी को पंचवर्षीय योजना बनाकर भी दूर नहीं कर सकी हैं, लेकिन मुहम्मद सल्ल० की पैदा की हुई क्रान्ति में उन सभी बुराईयों का अन्त हुआ। समाज में सुख एवं शांति, न्याय एवं इन्साफ़ तथा मानव समानता का वातावरण स्थापित हुआ। मानवता का बसन्त आया, इतिहास में इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। विशेष रूप से हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने महिलाओं, दुर्बलों एवं दासों का मानवीय स्थान बहाल किया। उनके अधिकार सुनिश्चित किये और अधिकारों की हनन पर सभी के लिये समान कानून लागू किया। यह क्रान्ति मात्र भौतिक नहीं थी, बल्कि एक ही समय में नैतिक, अध्यात्मिक, शैक्षिक और राजनीतिक भी थी। यह एक सर्वव्यापी और पूर्ण क्रान्ति थी, जिसकी मानवता को आज भी आवश्यकता है। इस क्रान्ति को बरपा करने के लिये हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सिद्धान्तों और व्यहारिक आदर्शों से लाभान्वित होने की आवश्यकता है।

अवतारवाद अथवा ईशदूतत्व (रिसालत)–

हमारे देशवासियों का विश्वास अवतारवाद पर है। इसका अर्थ यह बताया जाता है कि जब धरती पर बिगाड़ उत्पन्न होता है और अन्याय और अत्याचार बढ़ जाता है तो सुधार के लिये ईश्वर खुद धरती पर किसी रूप में प्रकट होता है और उस बिगाड़, अन्याय और अत्याचार को दूर करके चला जाता है। विष्णु भगवान के दस अवतार स्वीकार किये गये हैं। राम, परशुराम, कृष्ण, बलराम, महावीर जैन (मत्सयावतार), गौतमबुद्ध, नरसिंह (अर्ध–मानव एवं अर्ध शेर) मछली, कछुआ, सूअर (वामनावतार)।

कुछ लोगों ने अवतारों की संख्या चौबीस या उससे अधिक बताई है। शिव भगवान के भी अवतार माने गये हैं।

परन्तु कुछ धार्मिक विद्वानों का विचार है कि ''अवतार'' का अर्थ ईश्वर के खुद प्रकट होने के नहीं हैं, बल्कि अवतरित होने के हैं। यानी किसी संदेश का अवतरित किया जाना या उतारा जाना। मतलब यह कि शब्द ''अवतार'' का अर्थ संदेश लाने वाले का पृथ्वी पर भेजा जाना या उतारा जाना है। डा० एम०ए० श्रीवास्तव कहते हैं–

''अवतार का यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर स्वयं पृथ्वी पर साक्षात रूप में आता है, बल्कि वास्तविकता यह है कि वह अपने संदेश वाहक (अवतार) भेजता है। उसने मानवजाति के कल्याण, मार्गदर्शन एवं मुक्ति के लिये अवतार या पैगम्बर भेजे। यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद

सल्ल० पर समाप्त कर दिया गया। स्वामी विवेकानन्द और गुरूनानक जैसे महापुरूषों ने भी संदेशवाहन (पैग़म्बरी) एवं ईशदूतत्व (रिसालत) की पुष्टि की है। पंडित सुन्दरलाल, डा० वेद प्रकाश उपध्याय, डा० बी०एच० चौबे, डा० रमेश प्रसाद गर्ग और पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी जैसे विद्धानों ने 'अवतार' का अर्थ ईश्वर के द्वारा मानवता के कल्याण एवं मुक्ति के लिये अपने संदेष्टा एवं ईशदूत (रसूल) भेजना बताया है। (हज़रत मुहम्मद सल्ल० और भारतीय धर्म ग्रंथ, डा० एम०ए० श्रीवास्तव पेज–5)

अन्तिम अवतार को 'कल्कि अवतार' या 'नराशंस' कहा गया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि 'अवतार' की धारणा वेदों में नहीं है। सम्भवतः अवतारवाद हिन्दू धर्म की धारणा नही थी, इसे बाहर से लाकर सम्मिलित कर लिया गया। हालांकि गीता और पुराणों में अवतारवाद का उल्लेख मिलता है। अवतारवाद के बारे में निम्न प्रश्न उत्पन्न होते हैं–

1– धर्म ग्रन्थों, वेदों और विशेषकर क़ुरआन मजीद के अनुसार ईश्वर सभी मानवीय कमज़ोरियों से मुक्त है, वह जीवन एवं मृत्यु से परे है। उस जैसा कोई नहीं है और न हो सकता है, लेकिन अवतार की धारणा में सारी कमज़ोरियां ईश्वर की हस्ती में पाई जाती हैं। तनिक विचार कीजिये कि सृष्टिकर्ता की यह कितनी अपमानजनक अवधारणा है कि वह किसी नर का वीर्य बनकर किसी

नारी के गर्भ में नौ महीने रहकर बच्चा बनकर उत्पन्न हो, बचपन और जवानी के चरणों से गुज़रे, फिर मानव समाज में अन्याय एवं अत्याचार को समाप्त करके और सुधार आदि कार्य करके मृत्यु को प्राप्त हो जाये। क्या ईश्वर की महानता इस विचार की अनुमति देती है कि उसका अवतार मछली, सुअर और नरसिंह हो।

2– ईश्वर के जो गुण धर्म ग्रन्थों में बताये गये हैं और ईश्वर की महानता और महिमा की जो कल्पना पायी जाती है, अवतारवाद की अवधारणा उसके बिल्कुल विपरीत है। यह पहलू भी विचारणीय है कि ईश्वर स्वयं आकर सभी कार्य समाप्त करके चला जाता है, तो वह इन्सान के लिये कोई आदर्श नहीं हो सकता। इन्सानों के लिये इन्सान ही आदर्श या माडल बन सकते हैं। इस सम्बंध में वेदों पर विचार करें तो पता चलता है कि इन्सानों के मार्गदर्शन के लिये नराशंस के आगमन की भविष्यवाणियां मौजूद हैं। वेदों में सबसे प्राचीन ऋगुवेद है। सबसे अन्त में अथर्वेद है। पं० वेद प्रकाश उपाध्याय ने वेदों के हवाले देकर सिद्ध किया है कि 'नराशंस' और 'अन्तिम ऋषि' की यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्ल० से सम्बन्धित है। वेदों में 'मुहम्मद' और 'अहमद' दो नाम आये हैं। नराशंस की विशिष्टतायें जो वेदों में बतायी गयी हैं, वह केवल हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ही पूर्ण रूप से चरितार्थ होती हैं।

इसी प्रकार पुराणों और उपनिषदों में अन्तिम अवतार का उल्लेख 'कल्कि अवतार' के नाम से मिलता है।

'कल्कि अवतार' की जो विशेषतायें और निशानियां बताई गयी हैं, वह केवल हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर चरितार्थ होती हैं। पुराणों में विशेषकर भविष्य पुराण, भागवत पुराण में कल्कि अवतार के रूप में हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन की भविष्य वाणियां मौजूद हैं। प्रबल सम्भावना यह है कि अतीत के विभिन्न कालों में भारत में ईशदूत और नबी आये होंगे, जिन्होंने ईश्वरीय संदेश प्रस्तुत किया होगा। अवतार और ऋषि जिन महात्माओं को कहा जाता है, वह वास्तव में ईशदूत और नबी रहे होंगे। ईशदूतों और नबियों के भारत में आगमन को स्वीकार न किया जाये तो इन धर्मग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन की भविष्यवाणियों की क्या व्याख्या की जायेगी। विडम्बना यह है कि कुछ चालाक लोगों ने ईशदूतों और नबियों की शिक्षाओं को छुपाया, अपने विशेष वर्ग के अलावा किसी को इन शिक्षाओं से परिचय नहीं कराया। कुछ निरपेक्ष विद्वानों ने संस्कृत सीखकर और वेदों तथा दूसरी पुस्तकों का अध्ययन करके दुनिया को उनसे परिचित कराया। उनकी शिक्षाओं से बहुदेववाद, आवागमन और अवतारवाद की लोकप्रिय व्याख्या की इमारत ढह जाती है।

मुसलमानों ने भारत में अपने आगमन के बाद अपने लम्बे शासनकाल में भारतीय धर्म ग्रंथों के बारे में शोध कार्य का भरपूर प्रयास नहीं किया गया। संस्कृत भाषा सीख कर धर्म ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया जाता और

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन की भविष्यवाणियों पर शोध किया जाता तो देशवासियों की बड़ी संख्या इन तथ्यों से परिचित होकर सत्य-धर्म के करीब हो जाती।

अवतारवाद की प्रचलित व्याख्या के विपरीत इस्लाम ने, जो अवधारणा प्रस्तुत किया है, उसे ईशदूतत्व की अवधारणा कहते हैं। यह बात स्पष्ट है कि इन्सान मात्र रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और इलाज आदि का मुहताज नहीं है, बल्कि वह अपने लिये हिदायत और मार्गदर्शन का (जो एक सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था के रूप में हो) इन सबसे बढ़कर मुहताज है। प्रश्न यह है कि हिदायत और मार्गदर्शन कहां से आये? कौन करे? क्यों कि रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा इलाज जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति में लिये तो एक सीमा तक बुद्धि, अनुभव और इन्सान की योग्यतायें भी पर्याप्त हैं, परन्तु ज्ञान के संसाधन क्या मार्गदर्शन और जवीन व्यवस्था भी दे सकते हैं? इसका उत्तर नहीं में है। इन्सान ने अपनी बुद्धि, अनुभव और अतीत के इतिहास से लाभान्वित होकर जितने दृष्टिकोण, दर्शनशास्त्र और धर्म बनाये, वह सब विफल हो गये।

ईश्वर सृष्टा, स्वामी और पालनहार ही नहीं, बल्कि वह बेहतरीन हिदायत और मार्गदर्शन करने वाला भी है। उसने इन्सान को प्रतिनिधि (खलीफ़ा) और सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया। उसे वह अपनी दया से परिपूर्ण किया है। उसके न्याय और तत्वदर्शिता और पालनकारिता की मांग है कि वह अपने बन्दों का मार्गदर्शन भी करे। चुनांचे ईश्वर ने

हज़रत आदम अलैह० को जो पहले इन्सान और पहले ईशदूत भी थे, और उनकी नस्ल को प्रारम्भ से ही मार्गदर्शन प्रदान किया।

समय के व्यतीत होने के साथ जनसंख्या बढ़ती गयी तो ईश्वर ने विभिन्न जातियों के मार्गदर्शन के लिये अपने चुने हुये बन्दों को अपना ईशदूत या संदेश वाहक नियुक्त किया। उनको नबी और पैगम्बर कहते हैं। इस सिलसिले को ईशदूतत्व यानी रिसालत कहा जाता है। विख्यात रिवायत यदि सही हो तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० का ज़माना आने तक लगभग एक लाख चौबीस हज़ार ईशदूत और नबी दुनिया में आ चुके थे। आप सल्ल० के काल में संचार माध्यम और यातायात के साधनों में इतनी तरक्की हो चुकी थी कि विश्वव्यापी समाज अस्तित्व में आ गया था। इसीलिए अब अलग-अलग जातियों के लिये ईशदूतों तथा पैगम्बरों को भेजने के बजाये एक ही पैगम्बर का समस्त मानव जाति के लिये नियुक्त किया जाना पर्याप्त था। हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उन पर अवतरित ग्रन्थ कुरआन मजीद मात्र अरब जाति के लिये नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिये है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इन्सानों के मार्गदर्शन का अन्तिम, सर्वव्यापी और पूर्ण संस्करण इस्लाम धर्म के नाम से प्रदान किया गया। आप सल्ल० का आगमन इतिहास के पूर्ण प्रकाश में हुआ। आप सल्ल० की जीवनी और कथन सुरक्षित हैं, जो ग्रन्थ आप सल्ल० पर तेइस

वर्षों में थोड़ा-थोड़ा करके ईश्वर की ओर से अवतरित हुआ था, वह पूर्ण रूप से सुरक्षित है। कुरआन मजीद का संकलन आप सल्ल० के जीवन में पूरा हो चुका था। इस कारण से अब किसी नये ईशदूत और नये ग्रंथ की कोई आवश्यकता मानवता के मार्गदर्शन के लिये शेष नहीं रही।

नराशंस और कल्कि अवतार

विभिन्न धर्म ग्रन्थों में मुहम्मद सल्ल० के आगमन की भविष्यवाणियां मौजूद हैं। आप सल्ल० के व्यक्तित्व से सम्बन्धित स्पष्ट लक्षणों और निशानियों का उल्लेख है। कुछ ऐसी निशानियां भी बताई गयी हैं, जो मात्र हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर चरितार्थ होती हैं आप सल्ल० के सिवा कोई दूसरी हस्ती इन भविष्यवाणियों और लक्षणों का चरितार्थ नहीं है।

संसार में सदैव यह होता रहा है कि पिछले ईशदूतों एवं पैगम्बरों की शिक्षा मिटा दी गयीं और उन ग्रन्थों में इतने परिवर्तन किये गये कि आज उनकी मूल शिक्षाओं का पता लगाना सम्भव नहीं रहा। उन ग्रन्थों में मनमाने ढंग से बढ़ोत्तरी की गयी और बहुत सी शिक्षाओं को निरस्त कर दिया गया कि इस मिलावट के नतीजे में ईश्वरीय ग्रंथ विकृत होकर रह गया। इन सबके बावजूद वेदों में (जो प्राचीनतम धर्म ग्रन्थ समझे जाते हैं) हज़रत मुहम्मद सल्ल० का उल्लेख पाया जाता है। वेदों के अतिरिक्त तौरात, इंजील और निव टेस्टामेन्ट यहां तक कि बुद्ध मत तथा जैन मत की पुस्तकों में यह भविष्यवाणियां पाई जाती हैं। पुराणों में हज़रत मुहम्मद सल्ल० का कल्कि की अवतार के नाम से उल्लेख हुआ है। इस सम्बन्ध में कुछ हिन्दू विद्वानों ने अपने लेखों में प्रमाण के साथ सिद्ध किया है कि जिस महापुरूष के आगमन से सम्बंधित ये भविष्यवाणियां और लक्षण अंकित हैं वह केवल हज़रत

मुहम्मद सल्ल० हैं। वेदों में आप सल्ल० को नराशंस कहा गया है। मुहम्मद और अहमद, जो आपके दो नाम हैं, स्पष्ट अंकित है। नराशंस संस्कृत शब्द है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है 'नर' और 'आशंस'। नर का अर्थ इन्सान के होते हैं और आंशस का अर्थ है जिसकी प्रशंसा की गयी हो। नरांशस के सम्बन्ध से चारों वेदों में इक्तीस (31) स्थानों पर उल्लेख मौजूद है।

पं० वेद प्रकाश उपाध्याय अपनी पुस्तक 'नराशंस' और अन्तिम ऋषि (रसूल) लिखते हैं– ''हमें एक ऐसे व्यक्तित्व की खोज करना है जो मनुष्य भी हो, जिसकी प्रशंसा भी की गयी हो और जिसकी प्रशंसा की जायेगी। मुहम्मद सल्ल० इन्सान थे, लिहाज़ा इनमें मानवीयता और प्रशंसा दोनों विशेषतायें अंतिम सीमा तक पाई जाती हैं। नराशंस और मुहम्मद सल्ल० एक ही व्यक्तित्व का संस्कृत और अरबी नाम है। (पेज नं. 14)

अथर्वेद में हज़रत मुहम्मद सल्ल० के स्थान की व्याख्या निम्न शब्दों में की गयी है ''उसकी सवारी ऊँट होगी। (अथर्वेद 20–129–2)

इससे स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस क्षेत्र में आयेंगे वहां ऊँट सवारी के लिये इस्तेमाल किये जाते होंगे। इसलिये यह सत्य है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० का क्षेत्र रेगस्तानी था और सवारी के लिये आपने ऊँट का इस्तेमाल किया है।

यजुर्वेद का एक महत्वपूर्ण श्लोक यह है कि जिसमें

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का एक नाम 'अहमद' अंकित है।

''अहमद महान व्यक्ति है। सूर्य के समान अंधकार को मिटाने वाले, उन्हीं को मानकर परलोक में सफल हुआ जा सकता है। इसके अतिरिक्त सफलता तक पहुँचने का कोई दूसरा मार्ग नहीं''। (यजुर्वेद 31–18)

डा० एम०ए० श्रीवास्तव अपनी पुस्तक वैदिक साहित्य एक विवेचन (पेज नं० 101) में आलोप उपनिषद से निम्न मन्त्र लिखते हैं।

''उस देवता का नाम ईश्वर हैं वह एक है, मित्र, वरूण आदि उसके गुण हैं। वास्तव में वरुण है, जो सम्पूर्ण जगत का पालनकर्ता है। मित्रो, उस ईश्वर को अपना उपास्य समझो......ईश्वर सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, सबसे सर्वाधिक पूर्ण और सर्वाधिक पवित्र है। मुहम्मद ईश्वर के श्रेष्ठतम रसूल हैं। ईश्वर आदि से अन्त और समस्त सृष्टियों का सृष्टिकर्ता एवं पालनहार है। सारे अच्छे नाम ईश्वर के लिये है। वास्तव में ईश्वर ही है जिसने सूर्य, चन्द्रमा और तारे पैदा किये हैं। (3—2—1)

हज़रत मुहम्मद सल्ल० से सम्बन्धित और अधिक लक्षण और निशानियां सविस्तार निम्न हैं–

- नराशंस को ईश ज्ञान दिया जायेगा (ऋगुवेद संहिता–1–13–3)
- नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा (ऋगुवेद संहिता–1–106–4)
- नराशंस का एक सांसारिक नाम मुहम्मद सल्ल० होगा– (अथर्वेद– 20–127–3)
- नराशंस दस मालाओं वाला होगा– (अथर्वेद– 20–127–3)
- नराशंस दस हज़ार गोवों वाला होगा– (अथर्वेद– 20–127–3)

अथर्वेद में निम्नलिखित उद्धरण पर विचार करें।

“लोगों सुनो, नराशंस को लोगों के मध्य भेजा जायगा। उस महावीर को हम साठ हज़ार नब्बे शत्रुओं से शरण में लेंगे”

उसकी सवारी ऊँट होगी जिसकी महानता आकाशों को भी झुका देगी। इस महापुरूष को सौ दीनार, दस मालायें, तीन सौ घोड़े और दस हज़ार गायें दी जायेगी (अथर्वेद 2–3–127–20) ।

इन मन्त्रों से सम्बंधित पं० वेद प्रकाश उपध्याय ने अपनी पुस्तक नराशंस और अन्तिम ऋषि में सिद्ध किया है कि सौ दीनार से तात्पर्य असहाबे सुफ्फा (चबूतरे वाले) और तीन सौ तेरह घोड़े से तात्पर्य वद्र के सहाबियों (साथियों) दस हज़ार गायों से तात्पर्य मक्का विजय की फौज है।

कल्कि अवतार :–

इस शीर्षक के अन्तर्गत जो बातें नीचे लिखी जा रहे है, वे डॉ० एम०ए० श्रीवास्तव की पुस्तक “हज़रत मुहम्मद सल्ल० और भारतीय धर्म ग्रन्थ” (पेज नं०– 23, 36) का सारांश है। जो पाठक विस्तार से देखना चाहें उन्हें मूल पुस्तक का अध्ययन करना चाहिये।

अवतार का अर्थ इन्सानों को ईश्वरीय संदेश पहुँचाने वाले महात्मा का पृथ्वी पर पैदा होना है या दूसरे शब्दों में ईश्वर से सम्बंध रखने वाले व्यक्ति का पृथ्वी पर भेजा जाना है। ईश्वर से निकटतम सम्बंध रखने वाला, उसका भक्त या उपासक ही हो सकता है। प्राचीनकाल में

एक अवतार से सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव न था। इसलिए प्रत्येक देश और काल के लिये अलग-अलग अवतार हुये हैं। कुरआन में है ''प्रत्येक जाति के लिये एक मार्गदर्शक है'' (सूरह रअद, आयत-7)

अन्तिम अवतार कल्कि की विशेषता विशिष्ट गुण है। क्योंकि वह किसी एक भू-भाग के लिये नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत के लिये भेजे गये हैं। जब लोग सत्य धर्म का परित्याग कर अधर्म का मार्ग ग्रहण कर लेते हैं, या धर्म को अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये विकृत कर देते हैं तो उन्हें सत्य मार्ग दिखाने के लिये ईश्वर अपने अवतार या पैगम्बर भेजता है।

अन्तिम अवतार के आगमन के लक्षण और निशानियाँ-

कल्कि के आगमन के समय माहौल की तस्वीर इस प्रकार प्रस्तुत की गयी है, कि चारो ओर बर्बरता का वर्चस्व होगा, लोगों में हिंसा, आराजकता और विशिहीनता का बोल बाला होगा। दूसरों को मारकर उनका माल लूट लिया जायगा। लड़कियों के जन्म लेते ही उन्हें मिट्टी में दफन कर दिया जायेगा। एक ईश्वर को छोड़कर सैंकड़ों भगवानों की पूजा और उपासना आम हो जायेगी।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन के समय लोगों ने मूल धर्म को भुला दिया था और एक ईश्वर के स्थान पर कहीं तीन, कहीं सैंकड़ों खुदा गढ़ लिये थे। धर्म का अर्थ अंधविश्वासों पर विश्वास करना और मूर्ति पूजा थी। यह

बात विचारणीय है कि अन्तिम अवतार का काल युद्धों में घोड़ों और तलवारों के प्रयोग का युग था। तलवारों और घोड़ों का दौर तो अब समाप्त हो चुका है। अब युद्धों में टैंकों और आधुनिक हथियारों का प्रयोग होता है। चौदह सौ वर्ष पूर्व तलवार और घोड़े प्रयोग किये जाते थे।

कल्कि अवतार का स्थान कल्कि पुराण और भागवत पुराण में सम्भल गांव बताया गया है। संभल गांव का नाम है या गांव की विशेषता, यह शोध का विषय है। इसीलिये विद्वानों ने बताया है कि सम्भल वास्तव में गांव की विशेषता है। अर्थात वह स्थान जिसके निकट पानी हो और वह स्थान अत्यंत सुन्दर आकर्षक और सुख शान्ति वाला हो। संभल का शाब्दिक अर्थ ''शान्ति मय स्थान'' के हैं मक्का को ''दारुल अमान'' कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ ''शान्ति का घर'' होता है।

कल्कि पुराण के दूसरे अध्याय के श्लोकों में अन्तिम अवतार की जन्मतिथि और उनके माता-पिता के नामों का उल्लेख है। यह भी बताया गया है कि उसके जन्म से दुखी मानवता को कल्याण और मुक्ति प्राप्त हो गयी। उसका जन्म बसन्त ऋतु के रबी फसल में चांद की बारह तारीख को होगी।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का जन्म 12 रबीउल अव्वल को मक्का में हुआ। रबी का अर्थ है बसन्त ऋतु का महीना। कल्कि के पिता का नाम ''विष्णु यश'' बताया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पिता का नाम अब्दुल्ला था।

विष्णु अर्थात ईश्वर और यश यानी बन्दा। कल्कि की माता का नाम सुमति (सोमवती) आया है, इसका अर्थ है शान्ति तथा सोच-विचार की विशेषता रखने वाली। मुहम्मद सल्ल० की माता का नाम आमना था, जिसका अर्थ अमन यानी शान्ति वाली होता है।

कल्कि अवतार की विशेषता :-

1- एक घोड़े पर सवारी करने वाला होगा।

2- वह अत्याचारियों की शक्ति को नष्ट करेगा।

3- चार भाईयों की सहायता से सुशोभित होगा। (कलिक चार साथियों की सहायता से शैतान से निपटेंगे) हज़रत मुहम्मद सल्ल० के चार साथी अबू बक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, उस्मान रज़ि० और अली रज़ि० थे।

4- कल्कि को अन्तिम युग का अवतार बताया गया है। भागवत पुराण के चौबीस अवतारों में ''कल्कि'' सबसे अन्तिम अवतार है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने घोषणा किया कि वह ईश्वर के अन्तिम पैगम्बर (अवतार) हैं।

कल्कि की आठ विशेषतायें :-

कल्कि अवतार को भागवत पुराणा के स्कंध बारह अध्याय दो में आठ विशेषताओं से सुशोभित वाला बताया गया है। इन विशेषताओं का उल्लेख महाभारत में भी हुआ है। ये विशेषताएं निम्न हैं-

1- वह महान विद्वान होगा।

2- वह उच्चकुल का होगा।

3- वह बड़ा संयमी एवं धर्म परायण वाला होगा।

4- वह वह्य (प्रकाशना) का ज्ञान रखने वाला होगा।

5- वह साहसी तथा उत्साही होगा।

6- वह अल्पभाषी होगा।

7- वह महान दानी होगा।

8- वह ईश्वर का कृतज्ञ होगा।

उपर्युक्त विशेषताओं का प्रदर्शन हज़रत मुहम्मद के पवित्र जीवन में पूर्ण रूप से देखा जा सकता है।

हज़रत मुहम्म्द सल्ल० का संक्षिप्त जीवन परिचय–

पिछले पन्नों में आपके समक्ष एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व तथा परलोक के बारे में बताया जा चुका है। आप जान चुके हैं कि पहले इन्सान हज़रत आदम अलै० और उनकी पत्नी हज़रत हव्वा थे। ईश्वर के आदेश से यह जोड़ा ज़मीन पर उतारा गया। मानव जीवन के मार्गदर्शन के लिये ईश्वर की ओर से मार्गदर्शन यानी धर्म हज़रत आदम को दिया गया। वह धर्म इस्लाम था (उस समय के भाषानुसार जो भी उसका नाम रहा हो) हज़रत आदम अलै० पहले ईशदूत थे। ज्यों-ज्यों आदम अलै० की सन्तान बढ़ती गयी, विभिन्न क्षेत्रों में फैलती और आबाद होती चली गयी, ईश्वर ने उनके मार्गदर्शन और हिदायत के लिये ईशदूतों का सिलसिला प्रारम्भ किया। यह ईशदूत संसार के प्रत्येक देश एवं समुदाय में विभिन्न कालों में भेजे गये थे। हमारे देश भारत में भी अवश्य ईशदूत आये होंगे। ईशदूत्व के श्रृंखला की अन्तिम कड़ी हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। यहाँ उनके पवित्र ओर आदर्श जीवन का संक्षिप्त परिचय कराया जा

रहा हैं। आप हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जीवन की विस्तृत जानकारी के लिये अन्य पुस्तकों का अध्ययन करें।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० 571 ई० में मक्का शहर (अरब) में पैदा हुये। आपके जन्म से कुछ महीने पूर्व आपके पिता अब्दुल्ला का निधन हो गया था। जन्म के छः वर्ष बाद माता आमना का भी देहान्त हो गया। इस प्रकार आप बचपन में ही में अनाथ हो गये। आपका पालन-पोषण दादा अब्दुल मुत्तलिब ने की। उनके मृत्यु के उपरान्त आपके चचा अबू तालिब ने आपको पाला पोसा। आगे बढ़ने से पूर्व हज़रत मुहम्मद सल्ल० के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें जान लेना बहुत ज़रूरी है :

1- हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन की भविष्यवाणियां पिछले धार्मिक ग्रन्थों में साफ और स्पष्ट रूप से पाई जाती हैं। मिसाल के तौर पर वेद, पुराण, तौरेत, इन्जील (वर्तमान बाइबिल) बौद्ध ग्रन्थ आदि। हालांकि इन ग्रन्थों को सुरक्षित नहीं रखा जा सका। इनमें बहुत सारे परिवर्तन और बदलाव स्वयं उनके अनुयाइयों द्वारा की गयीं। परन्तु इसके बावजूद हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन की भविष्यवाणियां और निशानियां अंकित हैं। ये सारी विशेषतायें शत प्रतिशत केवल और केवल हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ठीक-ठीक बैठती हैं। इसका कुछ उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है।

- वेदों में हज़रत मुहम्मद को ''नराशंस'' कहा गया है।
- पुराणों में हज़रत मुहम्मद सल्ल० को ''कल्कि अवतार'' कहा गया है।

● बाइबिल में हज़रत मुहम्मद सल्ल० को ''फारकलीत'' कहा गया है।

● बौद्ध ग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद को ''अन्तिम बुद्ध'' कहा गया है।

2- हज़रत मुहम्मद की दूसरी विशिष्टता यह है कि आप इतिहास के पूर्ण प्रकाश में आये हैं। यानी आपके जन्म से लेकर बचपन, जवानी तथा ईशदूतत्व के पद पर आपकी नियुक्ति और ईशदूत बनाये जाने के उपरान्त 23 वर्षीय ईशदूतत्व जीवन का सारा विवरण प्रमाणित साधनों द्वारा सुरक्षित किया गया है। आज लगभग 1450 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, परन्तु आप सल्ल० की चौबीस घन्टे का दैनिक जीवन-चर्या एवं क्रिया-कलाप सुरक्षित हैं।

3- हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने स्पष्ट रूप से कहा कि आप कोई नया संदेश और नया धर्म लेकर नहीं आये हैं, बल्कि ईश्वर के पिछले पैग़म्बरों और ईशदूतों ने जो संदेश और शिक्षायें ईश्वर की ओर से प्रस्तुत की थीं वही आपने सारे इन्सानों के समक्ष प्रस्तुत कीं। इस प्रकार आप इस्लाम के संस्थापक नहीं हैं, इस्लाम ईश्वर की ओर से है।

यह बात भी स्पष्ट होती है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ईश्वर के अवतार यानी रूप नहीं हैं बल्कि इन्सान हैं और ईश्वर के बन्दे और उसके पैग़म्बर और दूत हैं।

बचपन और जवानी :-

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का बचपन उस युग की समस्त बुराइयों से बिल्कुल मुक्त और स्वच्छ था। आप बचपन में

ही अनाथ हो गये थे। आप सदैव सच बोलते थे। कभी झूठ नहीं बोला। शर्म व हया (लज्जा) कूट कूट कर भरी हुई थी। पवित्रता और स्वच्छता आपको बहुत प्रिय थी। मामलात, लेन-देन आदि में ऐसे खरे थे कि जिन लोगों ने भी आपके साथ कारोबार किया और यात्रायें कीं, उन्होंने सदैव आपकी प्रशंसायें व्यक्त कीं। किसी ने मामूली स्तर की भी कोई शिकायत कभी नहीं की। आपका जीवन अत्यन्त सादा था, इतना सादा और श्रेष्ठ कि कोई व्यक्ति उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। आपके घर, वस्त्र रहन-सहन, खाने-पीने का सारा विवरण पुस्तकों में उल्लिखित हैं। आपके अन्दर अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला लेने की भावना नहीं पायी जाती थी। आप बहुत ज़्यादा क्षमा और माफ़ करने वाले थे। कभी किसी ग़ुलाम, लौन्डी, बच्चे या औरत को नहीं मारा, आप कमज़ोरों, ग़ुलामों और अनाथों और बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। आप सदैव जानवरों पर दया और करूणा का बर्ताव करते और दूसरों को भी इसी की शिक्षा देते। कभी किसी जानवर को नहीं मारा, वादे के पक्के थे। मेहमानों का दिल से स्वागत करते और पड़ोसियों से अच्छा व्यवहार करते। बन्दों के अधिकारों का अत्यन्त ख्याल रखते थे। अरब समाज में मूर्ति पूजा का प्रचलन था। इसके अतिरिक्त बड़ी-बड़ी बुराइयां आमतौर से पाई जाती थीं और लोग उन्हें बिल्कुल बुरा नहीं समझते थे। मिसाल के तौर पर शराब, जुआं, व्यभिचार, अश्लीलता, हत्या, लूटमार और

लड़कियों को ज़िन्दा दफन करना आदि। इन सारी बुराईयों से आप सल्ल० का जीवन सदैव पवित्र रहा।

आपने व्यापार किया और अपनी ईमानदारी व निष्ठा के कारण पर बहुत सफल रहे। पच्चीस वर्ष की आयु में एक औरत (हज़रत खदीजा रज़ि०) से विवाह किया। हज़रत खदीजा रज़ि० दो बार विधवा हो चुकी थीं और विवाह के समय उनकी आयु चालीस वर्ष थी। उनसे आपकी कई सन्तानें हुयीं जिनमें तीन पुत्र और चार पुत्रियां थीं। तीनों बेटे बचपन में ही चल बसे।

आप चालीस वर्ष की आयु को पहुंचने तक मक्का में सतपुरुष एवं धरोहर-रक्षक के रूप में विख्यात हो चुके थे। गरीबों, विधवाओं, अनाथों और यात्रियों के साथ निष्ठा निःस्वार्थ और प्रेम का बर्ताव करते और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते थे।

अशान्ति, उत्पात, अन्याय एवं अत्याचार से आपको अत्यन्त घृणा थी। होश संभालते ही आपने सामाज और अवाम को करीब से देखा और क़ौम की खराबी और बिगाड़ को देखा तो आपको बहुत दुख और रंज हुआ। खाना-ए-क़ाबा का निर्माण एक ईश्वर की उपासना और इबादत के लिये किया गया था। परन्तु लोगों ने उसमें तीन सौ साठ मूर्तियां रख ली थीं। अरब में कबायली जीवन पाया जाता था। प्रत्येक क़बीले का देवता अलग-अलग था। विवाह के उपरान्त आप मक्का से कुछ दूरी पर एक पहाड़ी पर (जिसका नाम ग़ारे हिरा है) चले जाते और एकान्त में

चिन्तन–मनन करते थे। आपकी क़ौम में कुछ महत्वपूर्ण मानवीय विशेषतायें पायी जाती थीं, लेकिन साथ ही इसमें उल्लिखित भयानक बुराईयां उत्पन्न हो गयी थीं। पूरे समाज में ज़ुल्म व ज़्यादती और अशान्ति व्याप्त थी। ताकतवर कमज़ोरों को दबा लेता था और न्याय एवं इंसाफ का अन्त हो चुका था।

इन परिस्थितियों में ईश्वर की ओर से एक फरिश्ता (हज़रत जिब्रील अलै०) आया और बताया कि आपको ईश्वर ने अपना संदेष्टा और पैगम्बर बनाया है। आप केवल अरब जाति ही के लिये नहीं, बल्कि संसार के समस्त मानव जाति के लिये सन्देष्टा और पैगम्बर बनाये गये हैं।

इस भारी और नाज़ुक ज़िम्मेदारी के अचानक बोझ से स्वाभाविक रूप से आप सल्ल० को घबराहट हुई। घर पहुँचे, हज़रत खदीजा रज़ि० से सारी घटना बतायी। उन्होंने तसल्ली दी, कि ईश्वर आपको मिटायेगा नहीं। आप सदैव सच बोलते हैं, सम्बन्धियों से अच्छा बर्ताव करते हैं, भूखों को खाना खिलातें हैं, मेहमानों का स्वागत करते हैं। गरीबों और बेसहारा लोगों की सहायता करते हैं" पत्नी अपने पति की दूसरों की अपेक्षा सबसे बढ़कर रहस्यों को जानने वाली होती है। हज़रत खदीजा रज़ि० की गवाही हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सच्चायी का बहुत बड़ा सुबूत है।

हिरा की गुफा से मक्का वापस आने के बाद फिर गुफा

की तन्हाई में नहीं गये। यहां किसी को यह ग़लतफहमी न हो कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ईशदूत बनने की तैयारी कर रहे थे। ईशदूतत्व कड़ी मेहनत और कोशिश से पाने की चीज़ नहीं है। ईश्वर अपने बन्दों में से किसी विशेष बन्दे को खुद चयन करके पैगम्बर बनाता है। इसके द्वारा इन्सानों को हिदायत यानी मार्गदर्शन मिलता है और उसका व्यवहारिक जीवन लोगों को ईश्वर की मर्जी पर चलाने का रास्ता बताता है। इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्ल० नबूअत-श्रृंखला के अन्तिम ईशदूत हैं। यह ग़लत फ़हमी भी न होनी चाहिये कि आप मात्र समाज सुधारक थे, इस प्रकार आपकी हैसीयत किसी संत, सूफी या महात्मा जैसी नहीं है। आप वास्तविक रूप से ईश्वर के दूत और पैगम्बर थे। और इस हैसीयत में ईश्वर के बन्दों तक सत्य संदेश पहुँचाने का कार्य, ईश्वरीय मार्गदर्शन के अनुसार अदा करते थे। मात्र 23 वर्ष की अल्प अवधि में आप सल्ल० ने अपनी पैगम्बराना तत्वदर्शिता और मार्गदर्शन के द्वारा पूरे अरब में एक पूरी क्रान्ति बरपा किया और बेहतरीन इन्सानों का एक बड़ा समुदाय तैयार किया।

इस्लामी दावत का सुआरम्भ :-

पैगम्बर (ईशदूत) नियुक्त किये जाने के उपरान्त आप सल्ल० ने मक्का में सफ़ा नामक पहाड़ी पर चढ़ कर (उस समय के प्रचलन के अनुसार) लोगों को एकत्रित करने लिये आवाज़ दी। लोग एकत्रित हुये। पहले आपने उनसे पूछा कि वह आपके बारे क्या राय रखते हैं। लोगों ने कहा कि आप

सदैव सच्चे और अमानतदार रहे हैं और आपने कभी झूठ नहीं बोला है। इसके बाद आपने बताया कि पहाड़ी पर खड़े होने की वजह से आप दोनों ओर देख सकते हैं। आपने कहा यदि मैं कहूँ कि ''एक फौज है जो तुम पर हमला करने वाली है तो क्या मान लोगे'' लोगों ने उत्तर दिया कि ''हॉं मान लेंगे'' इसके बाद आपने अपनी दावत (आमन्त्रण) प्रस्तुत किया कि-

''मैं तुम्हे एक कठोर यातना से सचेत करता हूँ (बुखारी-मुस्लिम)

यहां ग़ौर करने से पता चलता है कि आपने पहले ही दिन अपनी दावत और सन्देश समस्त मानव जाति के लिये प्रस्तुत किया। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह मालूम होती है कि आप सल्ल० ने अरब समाज में पायी जाने वाली बुराइयों की समाप्ति और समाज के सुधार के लिये अलग-अलग आन्दोलन नहीं चलाये बल्कि ईश्वर की बन्दगी की एक ही दावत प्रस्तुत की।

दावत का विरोध :-

आप सल्ल० ने दावत दी कि एक ईश्वर की उपासना और इबादत करो और किसी दूसरे को उसके साथ साझी न बनाओ। लोगों के विचारों के अनुसार, यह दावत बाप-दादा की धार्मिक परिकल्पनाओं के विरुद्ध थी। इस आमन्त्रण को मुट्ठी भर लोगों ने तो स्वीकार कर लिया, किन्तु बड़ी संख्या ने उसका विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने खुद भी धैर्य रखा और

अपने अनुयाइयों को भी बेमिसाल धैर्य की शिक्षा दी, परन्तु विरोध में अत्याधिक तीव्रता पैदा होती चली गयी। आप के साथियों को अंगारों पर लिटाया जाता, कोड़ों से पीटा जाता और भिन्न-भिन्न तरीको से उनका ज़ुल्म और ज़्यादती का शिकार बनाया जाता। आरोपों और झूठे प्रोपेगन्डों का एक भयानक माहौल बना दिया गया, यहां तक कि एक घाटी में तीन वर्ष तक आपके साथियों और परिजनों का सामाजिक बाइकाट किया गया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनके साथी एक घाटी में क़ैद कर दिये गये। मासूम बच्चें माओं की छातियों में दूध न होने की वजह से बिलक-बिलक कर रोते थे। परन्तु विरोधी लोग घाटी के किनारों पर खड़े होकर कहकहे लगाते और उन्हें तनिक भी दया नहीं आती थी। तीन वर्ष के बाद कुछ मानवीय सहानभूति रखने वालों के प्रयासों से इस घाटी से रिहायी नसीब हुई। परन्तु मक्का में विरोध कम नहीं हुआ, बल्कि इसमें दिन ब दिन तीव्रता बढ़ती गयी।

ताइफ़ की यात्रा :-

हज़रत मुहम्मद सल्ल० अपने एक साथी को लेकर ताइफ़ की यात्रा पर रवाना हुये। ताइफ़ की बस्ती मक्का से अस्सी मील की दूरी पर स्थित है। वहां के सरदारों के सामने आपने दावत (आमंत्रण) प्रस्तुत की। उन्होंने आपकी दावत स्वीकार नहीं की और आप के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। उन्होंने कुछ आराजकतत्वों को आपको सताने के लिये लगा दिया। उन्होंने आप पर इतने पत्थर बरसाये कि

आप खून से लथपत हो गये। आपके जूतों में खून जम गया। यह बड़ी दर्दनाक घटना थी।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सारी दावती कोशिशें मानव जाति के मार्गदर्शन और उन्हें नरक की आग से बचाने के लिये थीं। ताइफ से फिर आप मक्का को वापस लौट गये।

हिजरत की घटना :–

मक्का में तेरह वर्ष तक ज़ुल्म सहन करने के बाद ईश्वर की ओर से आदेश हुआ कि अब मक्का से हिजरत (स्वदेश त्याग) करके मदीने चले जायें। मक्का में जीना दूभर हो चुका था। आपने अपने साथियों को मदीना जाने का निर्देश दिया। आप खुद भी 624 में मक्का छोड़कर मदीना चले गये। इस यात्रा को हिजरत कहते हैं। मक्का से हिजरत की रात मदीना प्रस्थान के समय मक्का वालों का बहुमूल्य धरोहर जो आपके पास सुरक्षित था, आपने उन सारे धरोहरों के वापसी का प्रबन्ध किया। हिजरत की घटना की तफसील बहुत ही ईमान को बढ़ाने वाली है। परन्तु यहां इसी संक्षिप्त बयान पर संतोष किया जाता है।

हज़रत मुहम्मद मदीना में :–

हज़रत मुहम्मद सल्ल० मदीना आ गये। यहां आप के समर्थकों की एक बड़ी संख्या पहले से मौजूद थी। उन्होंने आपका साथ देने का वादा भी किया था, मदीना में यहूदी कबीले भी आबाद थे। यहां पहुँच कर आपने इस्लाम के संदेश को फैलाने का सिलसिला प्रारम्भ किया। मदीना में

एक आसानी यह हुई कि इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में एक इस्लामी समाज और धीरे-धीरे एक इस्लामी व्यवस्था स्थापित करने का मार्ग खुल गया। मक्का के विरोधियों ने आप सल्ल० को सुकून के साथ काम करने का अवसर नहीं दिया। उन्होंने योजना बनाकर फौज तैयार किया और मदीने में कई बार हमले किये।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शान्तिप्रियता और इन्सानों से प्रेम का एक महत्वपूर्ण प्रमाण यह घटना कि मक्का में भयानक अकाल पड़ गया, आप मदीना में थे, मदीना में पैसा इकट्ठा करके पांच सौ दीनार कुरैश के सरदार अबुसुफियान के पास भिजवाये हालांकि अनुसुफियान और मक्के वाले आपके कट्टर शत्रु थे।

मदीना में यहूदियों से आपने सन्धि की। यह सन्धि शान्ति एवं धार्मिक स्वतन्त्रता की ज़मानत थी। मदीना में इस्लामी शासन के नायक के रूप में आपने दूसरे धर्म वालों यानी यहूदियों के मौलिक अधिकारों, उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता उनके पूजागृहों के सम्मान का वादा किया। उसे मदीना सन्धि (मीसाके मदीना) कहते हैं। हालांकि यहूदी सदैव इस सन्धि का विरोध करते रहे। इसके अतिरिक्त उन्होंने कभी-कभी षड़यन्त्रों के द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आपके साथियों के विरूद्ध युद्ध की योजना बनायी।

मदीना में ठहराव के बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल० को मक्का और पास-पड़ोस के कबीलों और यहूदियों से जो

छोटे व बड़े युद्ध करने पड़े उन की संख्या बयासी है। इनमें सत्ताइस युद्धों में हज़रत मुहम्मद सल्ल० स्वयं सम्मिलित हुये। उन युद्धों में मुसलमानों और उनके विरोधियों के मरने वालों की कुल संख्या 1018 है और क़ैद होने वालों की कुल संख्या 6565 है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने युद्ध के उद्देश्य और तरीकों को अपनी नैतिक शिक्षाओं के द्वारा मानवीय और रचनात्मक दिशा दिया। मानव इतिहास में इसका कोई उदाहरण नहीं मिलता। हज़रत मुहम्मद सल्ल की युद्ध के सिलसिले में अपने साथियों को दी जाने वाली हिदायतों पर विचार करें।

1- वचन भंगता न करो।

2- शत्रु के नाक कान और दूसरे अंग न काटो।

3- औरतों, कमज़ोरों और बच्चों और बूढ़ों और गुलामों को कत्ल न करो।

4- किसी को आग में न जलाओ।

5- बांध कर न मारो।

6- खेती बाड़ी को नष्ट न करो।

7- फलदार वृक्षों को न काटो और जानवरों को न मारो।

8- यात्री को क़त्ल न करो।

9- उपासना स्थलों को न ढाओ।

10- जो हथियार डाल दे उसे कत्ल न करो।

11- रात में किसी शत्रु के पास जाओ तो सुबह होने से पहले छापा न मारो । (जिहादे इस्लामी पेज 242)

इन युद्धों में मक्का विजय को छोड़कर शेष युद्धों में आपने पहल नहीं की, बल्कि अपने और मदीना वासियों की रक्षा के लिये युद्ध किया गया। एक अवसर पर हुदैबिया सन्धि की घटना अत्यन्त प्रसिद्ध है। आप सल्ल० इस सन्धि में ऐसी शर्तें स्वीकार करने के लिये तैयार हो गये, जिनमें बज़ाहिर मुसलमानों की कमज़ोरी ज़ाहिर हुई थी। इसी कारण आपके समर्थकों यानी साथियों पर यह संधि अप्रिय प्रतीत हुई। उसकी एक शर्त यह थी कि दोनों पक्ष आपस में दस वर्ष तक युद्ध नहीं करेंगे। यह शर्त आपकी शान्ति प्रियता का खुला सुबूत है। मदीना में निरन्तर प्रयासों के नतीजे में बड़ी संख्या में लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया। यहां तक कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० दस हज़ार समर्थकों की फौज को लेकर मक्का के लिये प्रस्थान किया।

मक्का विजय :-

मानव इतिहास की यह अजीब व ग़रीब और अद्वतीय घटना है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इन्सानों का खून बहाये बग़ैर मक्का पर विजय प्राप्त की। आपने उसके लिये बेहतरीन कूटनीति अपनायी। कुछ लोग अवश्य मारे गये, लेकिन किसी लड़ाई की नौबत नहीं आयी और आप मक्का में विजई के रूप में प्रवेश किया। उस समय आपकी ज़बान पर ईश-प्रशंसा और महानता के शब्द जारी थे। ऊँट पर आपका सर मुबारक झुका हुआ था। इस अवसर पर आपकी ओर से निम्नांकित घोषणा की गयी-

- जो व्यक्ति खाना–ए–काबा में चला जाय उसकी सुरक्षा है।
- जो व्यक्ति अबूसुफियान (मक्का के सरदार) के घर पहुँच जाये उसकी सुरक्षा है।
- जो व्यक्ति अपने घर का दरवाजा बन्द करले, उसको अमान है।
- जो व्यक्ति हथियार डाल दे उसकी सुरक्षा है।
- मांगने वाले का पीछा न किया जाये।
- घायल और कैदी को कत्ल न किया जाये।

तनिक विचार करें कि मक्का पर यह कैसा हमला था? मक्का इस प्रकार विजित हुआ कि इसमें रक्तपात नहीं हुआ। आप सल्ल० की दया और प्रेम का यह बहुत बड़ी उदाहरण है। मक्का विजय के अवसर पर बड़े–बड़े सरदार पराजित होकर उपस्थित थे, उन्होंने निरन्तर आप सल्ल० से शत्रुता की थी, आप पर और आपके साथियों पर ज़ुल्म ढाये थे, निर्दोष लोगों को क़त्ल किया था, घरों और जायदादों पर कब्जा किया था, लूटमार की थी। यह सब अपराधी थे। यदि इन को क़त्ल करने का आप आदेश देते तो किसी भी कानून के अनुसार वह अनुचित न होता। उनको आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया। वे सर झुकाये खड़े थे, आपने यह ऐतिहासिक वाक्य कहा ‘‘जाओ आज तुम सभी स्वतन्त्र हो, आज तुम पर कोई पकड़ नहीं’’ क्या मानव इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण मिलता है।

देहान्त :–

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का देहान्त 634 में 63 वर्ष की आयु में हुआ। आपने कोई सामान विरासत में नहीं छोड़ा। देहान्त से थोड़ा पहले साढे सात किलो जौ के बदले आपका कवच गिरवी रखा हुआ था। देहान्त के अवसर पर आपकी ज़बान से यह शब्द निकले, नमाज़ नमाज़, लौंडी और गुलाम। हम कितने ही धार्मिक गुरुओं को देखते है कि वह करोड़ों के जायदाद के मालिक होते हैं, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल० की विरासत में कोई उल्लेखनीय सामग्री मौजूद नहीं थी।

आवागमन या परलोक की इस्लामी धारणा

हमारे देशवासियों का मरणोत्तर जीवन के सम्बंध से लोकप्रिय परिकल्पना आवागमन का विश्वास है। इसका एक बौद्धिक तथा शोधपरक विश्लेषण नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

मृत्यु एक ऐसी वास्तविकता है जिसे आज तक किसी ने नहीं झुठलाया। मृत्यु के उपरान्त जीवन है या नहीं ? यदि है तो वह कैसा होगा ? क्या वह शाश्वत जीवन होगा? वहां सफलता पाने के लिये इस जीवन में हमें क्या करना होगा? मृत्यु के उपरान्त जीवन नहीं है तो क्या यह सांसारिक जीवन ही इन्सान की अन्तिम मंज़िल है और मृत्यु उसके जीवन को समाप्त कर देती है ?

मृत्यु के बाद क्या होगा ? इसे अवलोकन, अनुभव या किसी और तरह से जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। इन्सान लोगों को मरते हुये देखता है और यह भी देखता है कि मर कर जाने वाला कभी लौट कर नहीं आता। वह खुद भी एक दिन मर जाता है। लेकिन मालूम नहीं कर सकता कि मृत्यु के बाद लोग कहां जाते हैं। जहां जाते हैं वहां कब तक रहेंगे ? यह मात्र दार्शनिक प्रश्न नहीं है, बौद्धिक या एकडमिक समस्या नहीं बल्कि प्रत्येक इन्सान की स्थायी सफलता और असफलता का प्रश्न हैं। यह इतना महत्वपूर्ण प्रश्न है कि इन्सान उसको दूसरों का प्रश्न कह कर टाल नहीं सकता। मान लीजिये, मृत्यु के बाद कोई जीवन बिलकुल नहीं है, न स्थायी और न ही

अस्थायी तो इस स्थिति में इन्सान को मरणोत्तर जीवन के बारे में न सोचने की आवश्यकता है न कुछ करने की। जो कुछ है वह मात्र सांसारिक जीवन है और यहां की सफलता और असफलता आखिरी चीज़ है। बस इसको सामने रखकर इन्सान अपना जीवन व्यतीत करेगा। परन्तु यदि मृत्यु के उपरान्त जीवन है और वह सदैव के लिये होगा तो वहां सफलता प्राप्त करने के लिए सांसारिक जीवन में कुछ करना होगा। सत्य पर आधारित व्यवस्थाओं, सिद्धांतों, आदेश एवं नियमों को स्वीकार कर उनके अनुसार कार्यशैली अपनाना ज़रूरी होगा। किसी ने इन सभी को स्वीकार किये बग़ैर जीवन व्यतीत किया होगा तो उसे मृत्यु के बाद भयानक असफलता का सामना करना पड़ेगा। यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य और विफलता होगी। मृत्यु के बाद जीवन को न मानने वाले यह बात निश्चित रूप से कह सकते हैं कि मृत्यु के बाद क्या होगा? हम नहीं जानते, लेकिन वह यह नहीं कह सकते कि हां हम जानते हैं कि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है।

हमारे देश में मरणोत्तर जीवन के बारे में प्राचीन काल से निम्न धारणायें पायी जाती हैं।

एक धारणा यह है कि जीवन और मृत्यु जो कुछ है, बस इसी संसार तक सीमित है। यानी जो व्यक्ति मर गया वह सदैव के लिये खत्म हो गया। इसलिए सफलता और विफलता दोनों का सम्बंध इसी दुनिया से है। कर्मो की पूछगच्छ, परलोक, स्वर्ग एवं नरक कोई चीज़ नहीं है।

इसीलिए इन्सान को इस संसार में अधिक से अधिक भोग एवं विलासता का जीवन व्यतीत करना चाहिये और अपनी इच्छाओं की पूर्ति करनी चाहिये। यह विचार रखने वाले लोग कुछ ज़्यादा नहीं हैं।

एक दूसरी धारणा यह है कि इन्सान मरने के बाद कर्मों के आधार पर अच्छा या बुरा शरीर (योनि) लेकर संसार में नया जन्म पायेगा। आत्मा अमर है, इन्सान को अपने कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। जन्म, मृत्यु और फिर उसके उपरान्त जन्म का यह सिलसिला निरन्तर जारी रहता है। चौरासी लाख योनियों को इन्सान ग्रहण करता है और अन्त में अच्छा इन्सान बन कर जन्म लेता है, फिर इसके चक्र से उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है या मुक्ति की यह स्थिति बनती है कि आत्मा जाकर परमात्मा में मिल जाती है। इस धारणा के अनुसार मृत्यु के बाद निरन्तर जन्म और मृत्यु के इस चक्र में इन्सान कर्मो के आधार पर एक दूसरे इन्सान, जानवर, पेड़ या कोड़े मकोड़े आदि किसी भी योनि में पैदा हो सकता है। यहां के अधिकतर देशवासियों की धारणा यही है।

तीसरी धारणा यह है कि हज़रत आदम अलै० से स्वर्ग में एक गुनाह हो गया। उस गुनाह का दाग़ पैदा होने वाले हर बच्चे के साथ लगा हुआ है। इसके अतिरिक्त भी इन्सान से जीवन में गुनाह होते हैं। मृत्यु के बाद जीवन निश्चित है और वहां मोक्ष और सफलता की सूरत यह है कि जेसस यानी हज़रत ईसा मसीह (अलै०) ईशदूत को

ईश–पुत्र होने और स्वयं ईश्वर होने की हैसीयत से माना जाये। यहां तक कि सारे इन्सानों के गुनाहों के बदले सूली पर चढ़ाये जाने पर विश्वास किया जाये। मृत्यु के पश्चात जीवन में यही मोक्ष एवं मुक्ति का अकेला मार्ग है। यह धारणा ईसाई धर्म प्रस्तुत करता है।

एक धारणा इस्लाम प्रस्तुत करता है। वह धारणा यह कि सांसारिक जीवन परीक्षण के लिए और अस्थायी हैं, परन्तु मृत्यु के बाद एक और जीवन होगा, जो सदैव के लिये होगा। इन्सान को यहां परीक्षा के लिये रखा गया है। यह संसार परलोक की खेती है। इंसान सच्ची आस्था और सतकर्म अपना करके सतकर्मो की जो फसल बोयेगा, परलोक में उसका बदला स्वर्ग के रूप में पायेगा। पिता की गलती की सज़ा संतान को नहीं दी जायेगी। प्रत्येक व्यक्ति अपने अच्छे बुरे कर्मो के लिये स्वयं उत्तरदायी होगा। कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के कर्मों का बोझ नहीं उठायेगा। मृत्यु मर जाने का नाम नहीं है, बल्कि संसार एवं मृत्यु से गुज़र कर ही मनुष्य परलोक का शास्वत यात्रा करता है। पारलौकिक जीवन की व्यवस्था सांसारिक एवं भौतिक सिद्धान्तों से भिन्न होगा। परलोक इसलिए ज़रूरी है कि संसार में न्याय और इंसाफ की अपेक्षायें पूर्णरूप से पूरी नहीं हो रही हैं। कितने ही अपराधी, उपद्रवी और उदण्ड लोग बच जाते हैं या पूरी सज़ा नहीं पाते।

परलोक इसलिये भी ज़रूरी है कि ईश्वर ने जगत के अन्दर हर चीज़ का जोड़ा बनाया है। जोड़ा अपने जोड़े से

मिलकर एक उद्देश्य की पूर्ति करता है और कोई परिणाम निकलता है। जैसे धूप और छांव, रात और दिन, अंधेरा और उजाला आदि। इसी प्रकार दुनिया का जोड़ा परलोक है। परलोक के बग़ैर संसार उद्देश्यहीन, निष्फल तथा अंधेर नगरी और चौपट राजा के चरितार्थ होगा।

एक पहलू और भी है। ईश्वर ने इन्सान को संसार में नेमतें, अधिकार तथा सीमित स्वतन्त्रता प्रदान की है। एक दिन अवश्य ऐसा आना चाहिये कि जब इन सबके सम्बंध में प्रश्न हो कि उसने इन सब का प्रयोग ईश्वर के आदेशानुसार किया, या उसकी इच्छा और उसके आदेश के विरूद्ध प्रयोग करके उससे गद्दारी और अवहेलना करता रहा।

आधुनिक विज्ञान बताता है कि यह संसार धीरे-धीरे अपने विनाश की ओर बढ़ रहा है, इस्लाम में यह शिक्षा दी गयी है कि एक विशेष समय पर प्रलय घटित होगी। उसे ईश्वर के सिवा कोई नहीं जानता। यह पूरी व्यवस्था टूट-फूट जायेगी। इसको प्रलय कहा गया है। इसके बाद मरे हुये इन्सान पुनः ईश्वरी आदेश से जी उठेंगे और उनके सारे कर्मों का हिसाब किताब होगा। जो लोग ईश्वर पर विश्वास रखते थे और उसके आदेशों पर चल करके पूरे जीवन में उसके वफादार बने रहे, वह स्वर्ग में जायेंगे और जिन्होंने ईश्वर से बग़ावत की होगी वह नरक की अग्नि में डाले जायेगें।

आधुनिक विज्ञान कहता है कि दुनिया में प्रत्येक

इन्सान की सारी क्रिया-कलाप गतिविधियां तथा वार्ता आदि वातावरण में सुरक्षित रहती हैं। उसको रिकार्ड किया जा सकता है। इस्लामी धारणा का महत्व और सत्यता का यह पहलू महत्वपूर्ण है कि आधुनिक विज्ञान इसकी पुष्टि करता है। इसके अतिरिक्त मानव इतिहास अखण्डनीय सुबूत प्रस्तुत करता है। यानी ईशदूतों और पैगम्बरों ने मृत्यु के उपरान्त एक शाश्वत जीवन की सूचना दी है। ये ईशदूत तथा पैगम्बर अत्यन्त सच्चे और पावन चरित्र के इन्सान थे। अपने पूरे जीवनकाल में उन्होंने कभी एक बार भी झूठी बात नहीं की।

हिन्दू धर्म की बुनियाद चार वेदों पर है। उनमें आवागमन की धारणा नहीं पायी जाती, बल्कि मरणोत्तर जीवन तथा स्वर्ग एवं नरक की अवधारणा पायी जाती है। विभिन्न प्रकार के गुनाहों की सज़ायें विभिन्न नामों के नरक में दी जायेंगी। वेदों में 'पित्रलोक' का उल्लेख भी मिलता है। जिसे 'आलमे बरज़ख' कहा जा सकता है। यानी मृत्यु के पश्चात प्रलय तक इन्सानों का पुनः जीवित होना, हिसाब किताब और दंड एवं पुरस्कार यहां तक कि निर्णय होने तक बरज़ख के क्षणिक मर्हले का उल्लेख उपनिषद, महाभारत और गीता आदि में मौजूद है।

गीता में परलोक और आवागमन दोनों का उल्लेख है। इन दोनों परस्पर-विरोधी बातों में किस बात को सच्चा माना जाये। किस बात को स्वीकार किया जाये और किसका खंडन किया जाये?

आवागमन पर विचार करने से निम्न प्रश्न उत्पन्न होते हैं–

1– ब्रह्माण्ड में सर्वप्रथम किसकी रचना हुई ? अगर जगत में सबसे पहले किस चीज़ का निर्माण हुआ अगर इन्सान का तो यह इन्सान किनके कर्मों के फल स्वरूप उत्पन्न हुये? अगर यह कहा जाये कि इन्सान से पहले जगत में जानवर, पेड़–पौधे आदि पहले पैदा हुये, तो यह किन कर्मो के नतीजे में हुआ ?

2– वेदशास्त्रों के अनुसार इन्सान से पहले वे जीव उत्पन्न हुये जिनको इन्सानी गुनाहों का परिणाम बताया जाता है, यानी पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी आदि पहले उत्पन्न हुये और इन्सान बाद में उत्पन्न हुआ। वेदशास्त्र ही इन्सान को बताते हैं कि अच्छे कर्म कौन से हैं, जिसके फलस्वरूप अच्छे जन्म मिलेंगे और बुरे कर्म कौन से हैं जिनके कारण बुरे जन्म मिलेंगे ?

प्रश्न यह है कि क्या दंड एवं पुरस्कार के आदेश और क़ानून, यानी वैदिक साहित्य में दिये जाने से पहले ही इन जीवों को दण्डित किया गया।

3– आवागमन के अनुसार गुनाह और पाप का होना ज़रूरी है। क्योंकि इसके बिना अनाज और शब्जी, फल, फूल और पेड़–पौधे उग नहीं सकते। एक अजीब व ग़रीब पहलू इसका यह भी है कि दैनिक जीवन में इन्सान को सब्ज़ियां, फल–फूल आदि इस्तेमाल नहीं करना चाहिये क्यों कि पता नहीं, पिछले जन्म में किसी न किसी इन्सान

की आत्मा इसमें बसी होगी, जो इस जन्म में सब्ज़ी फल-फूल आदि बन गये। आवागमन के अनुसार किसी कष्ट से मुक्ति व्यक्ति की मदद नहीं करनी चाहिये। भूखों को खाना खिलाना, बीमारों की सेवा करना, नंगों के लिए वस्त्र का प्रबंध करना, मतलब यह कि मानव सेवा का कोई काम नहीं करना चाहिये, क्योकि यह लोग पिछले जन्म के पापों की सज़ा भुगत रहे हैं। वह अपनी पूरी सज़ा भुगतें।

4- इन्सान बुद्धि एवं विवेक, वाकशक्ति, विचार एवं कर्म की स्वतंत्रता और अधिकर रखता है। सुकर्म और कुकर्म, भलाई और बुराई, सही और गलत की पहचान भी रखता है। यह गुण इन्सान के अतिरिक्त किसी भी दूसरी प्राणियों में नहीं पाये जाते। परन्तु इन्सान गुनाहों के कारण जानवर, कीड़े-मकोड़े और सब्ज़ी फल-फूल बन जाता है। तो फिर इस अस्तित्व में अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यह सब विवश हैं। प्रकृति ने जो कार्य उनको सौंपा है और जो सिद्धान्त उनके जीने-मरने के लिये निर्धारित किये हैं, सब कुछ उसी के अनुसार हो रहा है। इन्सान के आलावा सारी प्राणियां अपनी स्वतन्त्र इच्छा पसन्द और अधिकार से भला या बुरा कुछ भी नहीं कर सकते उन्हें मोक्ष या मुक्ति की प्राप्ति का मसला दरपेश नहीं है।

5- इस विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आवागमन यानी इन्सान के जन्म एवं मृत्यु के चक्र में ईश्वर का कोई रोल या उसकी भूमिका है या नहीं। इसके

अतिरिक्त वह ईश्वर भी ऐसा है जो बन्दों से पाप हो जाने पर क्षमा करना और दरगुजर से काम लेना जानता ही नहीं, बल्कि आवागमन के इस चक्र में वह स्वयं भी विवश दिखायी पड़ता है।

मतलब यह कि आवागमन की यह अवधारणा बुद्धि और तर्क के किसी कसौटी पर पूरा नहीं उतरता । यह मानव-स्वभाव के विपरीत है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हिन्दू धर्म में बाहर से लाकर सम्मिलित किया गया है। वेद उसके उल्लेख से खाली हैं और विख्यात हिन्दू धर्म गुरू इसे स्वीकार नहीं करते।

स्वर्ग एवं नरक के दृश्य

पिछले पृष्ठों में यह बात बताई जा चुकी है कि इन्सान की मृत्यु के बाद उसके लिए शाश्वत जीवन नियत है। वहां उसके लिये दो में से एक ही ठिकाना होगा। यानी स्वर्ग अथवा नरक ।

प्रत्येक प्राणी को मौत का मज़ा चखना है, परन्तु इन्सान की मृत्यु का अर्थ फल-फूल, पेड़-पौधे या कीड़े-मकोड़े और दूसरी प्राणियों की मृत्यु नहीं है। इन्सान के अतिरिक्त वह जितने भी जानदार है, उनकी मृत्यु उनकी सदैव के लिये समाप्ति है। अपने उद्‌देश्य की पूर्ति के बाद उनकी मृत्यु होती है। इस दृष्टि से उनके जीवन और अस्तित्व दोनों का हमेशा के लिये समाप्ति हो जाती है, परन्तु इन्सान के साथ ऐसा नहीं है। मृत्यु के बाद उसके शाश्वत जीवन की यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। यह जीवन कर्म लोक, परीक्षण और इम्तिहान का समय है। यह जीवन एक ईश्वर को मान कर उसके आदेशों और उसकी इच्छा पर चलने और उसके रसूल (सल्ल०) के पूर्ण अनुपालन के लिये प्रदान की गयी है। कुरआन में दलीलों के साथ बताया गया है कि एक निर्धारित समय पर प्रलय घटित होगी। संसार की यह व्यवस्था समाप्त हो जायेगी। एक नया संसार और नई व्यवस्था यहां से बिलकुल भिन्न सिद्धान्तों के साथ बनायी जायेगी। सारे इन्सान ईश्वर के आदेश से दोबारा पैदा किये जायेंगे। सारे इन्सानों के विश्वास एवं कर्मों का हिसाब लिया जायेगा। यह इन्सान के असली और अन्तिम

परीक्षण का परिणाम होगा। इस परीक्षा में जो सफल होंगे वह स्वर्ग में और जो असफल होंगे नरक में भेज दिये जायेंगे।

प्रलय :–

इस सम्बन्ध में प्रलय, स्वर्ग और नरक के दृश्यों से सम्बन्धित कुरआन की निम्न आयतों पर विचार करें।

''और हमने तो आस्मानों और ज़मीन को एक उद्देश्य ही से पैदा किया है और निश्चित रूप से निर्णय की घड़ी आ कर रहेगी।'' (सूरह हिज्र आयत–85)

''क्या इन्सान यह ख्याल करता है कि उसे यूं ही छोड़ दिया जायेगा।'' (सूरह कियामा आयत–36)

''कहता हैं कौन इन हड्डियों में जान डालेगा जबकि ये जीर्ण–शीर्ण हो चुकी होगी ? उससे कहो, इन्हें वही जिन्दा करेगा जिसने पहले इन्हें पैदा किया था, और वह पैदा करने का हरकाम जानता है।'' (सूरह यासीन आयत–78–79)

''यह लोग तुमसे पूछते हैं कि आखिर वह प्रलय की घड़ी कब आयेगी? कहो उसका ज्ञान मेरे रब ही के पास है। उसे अपने समय पर वही प्रकट करेगा। आस्मानों और ज़मीन में वह बड़ा कठिन समय होगा। वह तुम पर अचानक आ जायेगा।

प्रलय का दृश्य :–

''जब आकाश फट जायेगा और जब तारे बिखर जायेंगे और जब समुद्र फाड़ दिये जायेंगे और जब कब्रें खोल दी जायेंगी। उस समय प्रत्येक व्यक्ति को उसका

अगला पिछला सब किया–धरा मालूम हो जायेगा।''
(सूरह इनफितार आयत–1–5)

''पूछता है, आखिर कब आयेगा वह प्रलय का दिन। फिर जब दीदे पथरा जायेंगे और चॉद प्रकाशहीन हो जायेगा। और चांद–सूरज मिलाकर एक कर दिये जायेंगे। उस समय यही इन्सान कहेगा। ''कहां भागकर जाऊं?'' हरगिज़ नहीं, वहां शरण लेने की कोई जगह न होगी। उस दिन तेरे रब ही के सामने जाकर ठहरना होगा। उस दिन इन्सान को सब अगला–पिछला किया कराया बता दिया जायेगा। (सूरह क़ियामा आयत–6–13)

''यह लोग उसे दूर समझते हैं और हम उसे करीब देख रहे हैं (यह अज़ाब उस दिन होगा) जिस दिन आसमान पिघली हुयी चांदी की तरह हो जायेगा और पहाड़ रंग–बिरंग के धुनके हुये ऊन जैसे हो जायेंगे और कोई घनिष्ट मित्र अपने घनिष्ट मित्र को न पूछेगा। हांलाकि वे एक दूसरे को दिखाये जायेगे। अपराधी चाहेगा कि उस दिन के अज़ाब से बचने के लिये अपनी औलाद को, अपनी बीवी को, अपने भाई को, अपने निकटतम परिवार को उसे शरण देने वाला था और ज़मीन के सब लोगों को अर्धदण्ड (बदले) के रूप में दे दें और यह उपाय उसे छुटकारा दिला दे। हरगिज़ यह सम्भव नहीं।''

(सूरह मआरिज आयत–6–15)

''जब ज़मीन अपनी पूरी शिद्दत के साथ हिला डाली जायेगी। और ज़मीन अपने अन्दर के सारे बोझ निकालकर बाहर डाल देगी। और इन्सान कहेगा कि इसको

क्या हो रहा है। उस दिन वह अपने बीते हालात बयान करेगी। क्यों कि तेरे रब ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया होगा। उस दिन लोग विभिन्न दिशा में पलटेंगे, ताकि उनके कर्म उनको दिखाये जायें। फिर जिस किसी ने कण-भर नेकी की होगी वह उसको देख लेगा, और जिसने कण-भर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा। (सूरह ज़िलज़ाल आयत-1-8)

''आखिरकार जब वह कान बहरे कर देने वाली आवाज़ ऊँची होगी। उस दिन आदमी अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागेगा। उनमें से हर व्यक्ति पर उस दिन ऐसा समय आ पड़ेगा कि उसे अपने सिवा किसी का होश न होगा। (सूरह अबस आयत-33-57)

क़ुरआन में स्वर्ग के दृश्य :-

कुरआन में स्वर्ग के दृश्यों का एक नक्शा निम्न आयतों में प्रस्तुत किया गया है।

''वहां जिधर भी तुम निगाह डालोगे नेमतें ही नेमतें और एक बड़े राज्य की सामग्री तुम्हे दिखायी देगी। उनके ऊपर बारीक रेशम के हरे वस्त्र उसी अतलस और दीबा के कपड़े होंगे, उनको चांदी के कंगन पहनाये जायेंगे, और उनका रब उनको अत्यन्त पवित्र पेय पिलायेगा। यह है तुम्हारे कर्मफल हो और तुम्हारी कोशिशें स्वीकार की गयीं हों। (सूरह दहर आयत-20-22)

''धर्म परायण (परहेज़गार) लोगों के लिये जिस

जन्नत का वादा किया गया है, उसकी शान तो यह है कि उसमें नहरें बह रही होंगी, ऐसे दूध की जिसके मज़े में तनिक फर्क न आया होगा, नहरे बह रही होंगी ऐसी शराब की जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होंगी, नहरे बह रही होंगी साफ-सुथरे शहद की। उसमें उनके लिये हर तरह के फल होंगे और उनके रब की ओर से क्षमा।

''उस दिन उन लोगों से जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे और आज्ञाकारी बनकर रहे थे, कहा जायेगा कि ऐ मेरे बन्दों! आज तुम्हारे लिये कोई डर नहीं और न तुम्हे कोई चिन्ता सतायगी। दाखिल हो जाओं जन्नत में सम्मान के साथ तुम और तुम्हारी पत्नियां, तुम्हें खुश कर दिया जायेगा। उनके आगे सोने की प्यालियां और जाम-सागर फिराये जायेंगे और हर मनभावनी और निगाहों को लज़्जत देने वाली चीज़ वहां मौजूद होगी। उनसे कहा जायगा ''तुम अब यहां हमेशा रहोगे। तुम इस स्वर्ग के वारिस अपने उन कर्मों के कारण हुये हो जो तुम दुनिया में करते रहे। तुम्हारे लिये यहां ढेर सारे मेवे मौजूद हैं जिन्हें तुम खाओगे।'' (सूरह ज़ुखरूफ आयत-68-73)

''जो लोग ईमान लाये है और उनकी सन्तान भी ईमान के किसी दर्जे में उनके पदचिन्हों पर चली है उनकी उस संतान को भी हम (स्वर्ग में) उनके साथ मिला देंगे और उनके कर्म में कोई घाटा उनको न दे देंगे''

हदीसों में स्वर्ग के दृश्य :-

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने स्वर्ग के

दृश्यों को प्रस्तुत करते हुये कहा है– ‘‘एक पुकारने वाला स्वर्ग वासियों को सम्बोधित करके कहेगा कि यहां तुम स्वस्थ रहोगे, कभी बीमार न होगे, ज़िन्दा रहोगे, तुम्हें कभी मौत न आयेगी। जवान रहोगे, कभी तुम पर बुढापा तारी न होगा। अैश व आराम में रहोगे, कभी सख्ती और दुख न देखोगे।

(हदीस– मुस्लिम)

स्वर्ग में एक कोड़ा रखने के बराबर जगह दुनिया व दूसरी वस्तुओं से बेहतर है। (हदीस बुखारी, मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्ल० ने कोड़े के स्थान पर कमान रखने के बराबर स्थान का उल्लेख किया है। यानी स्वर्ग में किसी को कमान रखने के बराबर भी जगह मिल जाये तो वह सम्पूर्ण जगत से बेहतर है।

‘‘जब स्वर्ग वाले स्वर्ग में चले जायेंगे तो ईश्वर कहेगा क्या तुम्हें कोई और वस्तु चाहिये? वह निवेदन करेंगे– हे ईश्वर! क्या तूने हमारे चेहरे रोशन नहीं किये ? क्या तूने हमें स्वर्ग में दाखिल नहीं किया ? क्या तूने हमें आग से मुक्ति नहीं दिलायी? (और क्या चाहिये) फिर अचानक पर्दा उठ जायेगा और स्वर्ग वालों को अपने रब की ओर देखना हर उस वस्तु से अधिक प्रिय लगेगा जो उन्हें स्वर्ग में दी गयी थी।’’ (हदीस– मुस्लिम)

नरक के दृश्य :–

नरक के दृश्यों के सम्बंध से ईश्वर का कथन है। ‘‘वास्तविकता यह है कि जो अपराधी बनकर अपने रब के

सामने हाज़िर होगा उसके लिये नरक है जिसमें न वह जियेगा न मरेगा।'' (सूरह ताहा आयत 74)

''इनमें से वे लोग जिन्होंने इन्कार किया उनके लिये आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जायेगा, जिससे उनके खालें ही नहीं पेट के भीतर के भाग तक गल जायेंगे। और उनकी सज़ा लेने के लिये लोहे की गदायें होंगी। जब कभी वे घबराकर जहन्नम से निकलने की कोशिश करेंगे फिर उसी में ढकेल दिये जायेंगे कि चखो अब जलने की सजा का मज़ा।''

(सूरह हज आयत 19—22)

''और मुंह मोड़ने वालों के लिये तो बस जहन्नम की उमड़ती हुई आग ही काफी है। जिन लोगों ने हमारी आयतों को मानने से इन्कार कर दिया है उन्हें अवश्य ही हम आग में झोकेगे ओर जब उनके बदन की खाल गल जायेगी तो उसकी जगह दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि वे अच्दी तरह अजाब का मज़ा चखे। ईश्वर बड़ी सामर्थ्य रखता है और अपने फैसलों को व्यवहार में लाने की हिम्मत को खूब जानता है।'' (सूरह सिाआयत 55—56)

''आज मेरा माल मेरे कुछ काम न आया। मेरा सारा प्रभुत्व समाप्त हो गया। आदेश होगा पकड़ो इसे और इसके गर्दन में तौक़ डाल दो, फिर इसे नरक में झोंक दो। फिर इसे सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से जकड़ दो। यह न महिमावान ईश्वर पर ईमान लाता था और न मुहताज को खाना खिलाने पर उभारता था। अतः आज न यहां इसका कोई हमदर्द मित्र है और न साथी और न जख्मों के धोवन के

सिवा इसके लिये कोई भोजन जिसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं खाता। (सूरह हाक्का आयत 28–37)

नरक के सम्बंध से मुहम्मद सल्ल० का कथन है–

''नरक वालों में से सबसे हलकी यातना वाला वह व्यक्ति होगा, जिसकी चप्पलें और फीते आग के होंगे, जिनकी वजह से उसका दिमाग़ इस तरह खौलेगा जिस तरह देगची चूल्हे पर खौलती है और वह यह नहीं समझेगा कि कोई उससे बढ़कर अज़ाब में है। हालांकि वह सभी नरक वालों से हलकी यातना में होगा।''

(हदीस– बुखारी, मस्लिम)

''ज़क्कूम (नरक में पैदा होने वाला वृक्ष) नरक वालों का भोजन है। अगर उसकी एक बूंद इस दुनिया में टपक जाये तो धरती पर बसने वालों के जीवन सामग्री को खराब कर दे। तो क्या गुज़रेगी उस व्यक्ति पर जिसका खाना वही वृक्ष होगा।'' (हदीस– तिर्मिज़ी)

कलिम-ए-शहादत

इस्लाम का मूल मंत्र

इस्लाम की बुनियाद जन्म, रंग व नस्ल, वंश व परिवार और भाषा और क्षेत्र पर नहीं है। ये सारी बातें ऐसी जो इन्सान के अधिकार क्षेत्र से बाहर हैं। संसार में कोई व्यक्ति अपनी इच्छा या पसन्द से जन्म नहीं पाता है और न किसी विशेष रंग व रूप या भाषा और क्षेत्र को अपना कर सकता है। उसकी इच्छा और पसन्द का कोई हस्तक्षेप इन मामलों में नहीं है।

इस्लाम एक स्वाभाविक, सार्वभौविक और मानवता धर्म है। इसलिए संसार का कोई व्यक्ति चाहे वह किसी रंग व रूप, परिवार और क्षेत्र से सम्बंध रखता हो, इस्लाम में प्रवेश पा सकता है। बशर्ते कि उसे इस्लाम की सत्यता पर विश्वास हो। क़ुरआन मजीद और ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सम्बंध से सही जानकारी उस तक पहुँच चुकी हों या पहुँचा दी गयी हो। इस्लाम में प्रवेश के लिये नीयत की पवित्रता और दुरस्तगी यानी निष्ठा और ईश भय की सबसे बढ़कर महत्व है। अगर किसी व्यक्ति ने मात्र किसी से विवाह रचाने के उद्देश्य से या किसी सांसारिक स्वार्थ या लालच की बुनियाद पर या किसी से बदला लेने के लिये सत्य धर्म स्वीकार किया तो उन सब स्थितियों में आशंका है कि ईश्वर की प्रसन्नता उसे प्राप्त न हो।

क़ुरआन में बताया गया है कि इस्लाम में प्रवेश पाने के लिए ज़ोर-ज़बरदस्ती और बल और शक्ति का प्रयोग

अप्रिय और ग़ैर क़ानूनी है। केवल यह इरादा और आशय होना चाहिये कि इस्लाम सत्य धर्म है। दलीलों की रोशनी में इसका सत्य धर्म होना स्पष्ट हो चुका है। इसको स्वीकार करने के फलस्वरूप दुनिया में सफल जीवन व्यतीत होगा और परलोक में नरक की आग से सुरक्षा हो सकेगी। दूसरी ओर सत्य स्पष्ट होने के उपरान्त उसे झुठलाने के नतीजे में दुनिया में नाकामी होगी और परलोक में नरक की आग का खतरा है।

इस्लाम में प्रवेश पाने के लिये कलिमा-ए-शहादत को सोच समझ कर और दिल से स्वीकार कर ज़बान से उच्चारण करना होता है। बेहतर है दो एक गवाह भी इस अवसर पर मौजूद हों। न हो तो भी कोई बात नहीं। यह कलिमा-ए-शहादत वास्तव में एक प्रतिज्ञा है जो एक बन्दा अपने सृष्टा और स्वामी से करता है। इस प्रतिज्ञा एवं वचन को जीवन भर निभाने और उसकी अपेक्षाओं को व्यवहारिक जीवन में पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिये। कलिमा-ए-शहादत निम्नवत् है-

''अशहदुअल्ला लाइलाहा इल्लल्लाह व अशहदुअन्ना मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुहू'' इसका अर्थ यह है-

''मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के सिवा कोई उपास्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० के बन्दे और उसके रसूल हैं।

''इस कलिमे का विशेष बिन्दु यह है कि इसमें पहले

बहुदेववाद का खन्डन है, यानी नहीं है कोई ईश्वर, इसके बाद एकेश्वरवाद की शिक्षा है यानी ‘‘सिवाये ईश्वर के’’ बहुदेववाद को पूर्णरूप से रद्द किये बग़ैर एकेश्वरवाद की कोई कल्पना नहीं की जा सकती।

कलिमा में ‘‘अल्लाह’’ (ईश्वर) प्रयुक्त हुआ शब्द है। ईश्वर सृष्टा, स्वामी पालनहार, प्रार्थना सुनने वाला, बन्दों और सृष्टियों का मार्गदर्शन करने वाला और काननू और विधान प्रदान करने वाला है। इन सारे पहलुओं से एक ईश्वर के अस्तित्व पर ईमान लाना और व्यवहारिक जीवन में ईमान को अपेक्षाओं को पूरा करना ज़रूरी है।

कलिमा का दूसरा भाग बताता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ईश्वर के पैग़म्बर (दूत) हैं। ईश्वर को उपर्युक्त तरीक़े पर स्वीकार कर लेने के बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल० को उसका दूत स्वीकार करने से इस्लाम में प्रवेश पूरा हो जाता है।

मुहम्मद सल्ल० को ईशदूत स्वीकार करने की अपेक्षायें निम्नवत् हैं–

ईशदूत पर ईमान और विश्वास के साथ उनसे गहरी मुहब्बत रखी जाये, यह माना जाय कि वह ईश्वर के अन्तिम दूत हैं। ईश्वर ने अपनी अंतिम ग्रंथ कुरआन मजीद को उन पर अवतरित किया। ईशदूत का सम्पूर्ण जीवन हमारे लिये आदर्श और नमूना है। उनका अनुसरण ईमान का मूल तकाज़ा है। ईश्वर ने इन्सान के जीवन को सफल बनाने और पारलौकिक जीवन में नरक की यातना से

बचाने के लिये विस्तृत विधान प्रदान किया है, मुहम्मद सल्ल० ने धर्म एवं विधान को लागू करके व्यक्ति को बेहतरीन प्रशिक्षण दिया और एक आदर्श खानदान, समाज और व्यवस्था स्थापित करके दिखाया। इस मार्गदर्शन और विधान की अवहेलना की जाये तो यह केवल सल्ल० की अवज्ञा ही नहीं है, ईश्वर की अवज्ञा है। यह ईश्वर से बग़ावत और उदंडता का मार्ग है।

सत्य की स्वीकृति :–

सत्य को जान लेने के बाद उसे स्वीकार करने या न करने का अधिकार और आज़ादी प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त है। यह अधिकार और आज़ादी स्वयं ईश्वर ने प्रदान की है। ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार दिया है, तो इससे वंचित करने का अधिकार संसार में किसी को प्राप्त नहीं है। हमारे देश में संविधान और क़ानून की दृष्टि से धर्म एवं विश्वास की स्वतन्त्रता है, यह ज़रूरी है कि धर्म के मामले में किसी प्रकार की ज़ोर न हो। कुरआन में ईश्वर का आदेश है–

''धर्म के मामले में कोई ज़ोर व ज़बरदस्ती नहीं''

(सूरह बकरा, आयत– 256)

नेकियों और भलाइयों को ग्रहण करना चाहते है।

सत्य को स्वीकार करना मात्र धार्मिक पहचान के परिवर्तन का नाम नहीं बल्कि यह अपने स्वभाव के सबसे महत्वपूर्ण मांगों को पूरा करना है। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति और आत्मा की गहराइयों में एक

ही ईश्वर, उपास्य और सच्चे प्रभु पर विश्वास करने, उसकी पूर्ण भक्ति और गुलामी ग्रहण करने का जज़्बा शामिल है। अगर उसकी प्रकृति विकृत नहीं हुई है तो वह व्यक्ति जो पहले सत्य से परिचित नहीं था, या उसके बारे में गलतफहमियों का शिकार था, सत्य का सही और पूर्ण परिचय होते ही उसे ग्रहण कर लेगा। यह मानो अपने प्रकृति के महत्वपूर्ण और मूल मांगों की पूर्ति है। इसे धर्म परिवर्तन कहना, सत्य की गलत व्यापकता ही गलत प्रोपेगन्डे के नतीजे में यह एक बदनाम शब्द बन गया है। विचार करें तो मालूम होगा कि हर व्यक्ति अपने जीवन के दूसरे पहलुओं में मुस्लिम है। यानी वह ईश्वर द्वारा निर्मित क़ानून पर अमल कर रहा है। उदाहरण स्वरूप अपने आंखों, कानों, ज़बान, मुंह, हाथों और पैरों से वह वही काम ले रहा है जिस काम के लिये यह अंग ईश्वर ने उसे दिये हैं। इस सम्बंध में इन्सान पूर्णरूप से विवश है। इससे हटकर कोई दूसरा काम लेने या ईश्वरी विधान के विरूद्ध कार्य करने की स्वतन्त्रता उसे प्राप्त नहीं है। परन्तु जीवन के दूसरे पहलू में उसे अधिकार और स्वतन्त्रता प्रदान की गयी है कि चाहे तो सत्य को स्वीकार करे या उसका इन्कार करे। दोनों स्थितियों में इसका परिणाम उसे स्वयं भुगतना होगा।

''और क्या हमने भलाई और बुराई के दोनों स्पष्ट रास्ते उसे नहीं दिखा दिये'' (सूरह बलद, आयत– 10)

''साफ कह दो कि यह सत्य है तुम्हारे प्रभु की ओर से। अब जिसका जी चाहे मान ले और जिसका जी चाहे इनकार कर

दे" (सूरह कहफ, आयत- 29)

अब तक की बहस से यह बात स्पष्ट हो गयी कि इस्लाम दुनिया के समस्त इन्सानों के स्वाभाविक आस्थाओं की शिक्षा देता है। इन आस्थाओं की पुष्टि में व्यक्ति के अपने अस्तित्व से लेकर सम्पूर्ण जगत में दलीलें और निशानियां पायी जाती हैं। सत्य के विरुद्ध जो भी दूसरा विश्वास की धारणा कोई व्यक्ति अपनाता है, वह अस्वाभाविक और विवेकहीन है। मानों वह इस प्रकार अपने स्वभाव और प्रकृति से स्वयं युद्ध करता है। स्वनिर्मित विश्वासों और धारणाओं की पुष्टि में इन्सान कोई दलील अपने अस्तित्व के अन्दर या इस सम्पूर्ण जगत में प्रस्तुत नहीं कर सकता।

कौन लोग सत्य को स्वीकार करते हैं:-

● जो सत्य की जिज्ञासा रखते हैं, और सोच-विचार से काम लेते हैं, अपने सृष्टा की प्रसन्नता को पाने की और उसके क्रोध और पकड़ से बचने की इच्छा रखते हैं-

● जिन्हें अपने परिणाम की चिन्ता होती है।

● जो पक्षपात, अहंकार और अभिमान से बचकर जीवन व्यतीत करते हैं।

● जो ईशभय एवं संयमी जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, सत्कर्मो और भलाइयों को ग्रहण करना चाहते हैं।

● जो सच्चे स्वभाव के होते हैं जो अपनी अन्तर्रात्मा और प्रकृति की मागों को सत्य के प्रकाश में पूरा करना चाहते हैं।

जिनमें सत्य को स्वीकार करने के नतीजे के आजमाइशों और बलिदान को सहन करने का साहस और हौसला होता है।

इस संसार में सत्य को स्वीकार करने का परिणाम इन्सान के कल्याण और मुक्ति, सुख और शान्ति के रूप में ज़ाहिर होता है। सत्य से लगाव परलोक में स्थायी प्रसन्नता और शान्ति का स्थान (स्वर्ग) को पाने का साधन है और नरक की आग से बचने की जमानत है।

सच्चाई के इन्कार की वजह–

संसार में आमतौर से निम्न कारण हैं जिनकी वजह से लोग सत्य का इन्कार करते है–

1– ज़िद और हठधर्मी

2– बाप–दादा का अन्धा अनुसरण

3– भौतिकवाद

4– मन की इच्छाओं का अनुपालन

5– जातीय और वर्गीय श्रेष्टता की भावना और पक्षपात और संकीर्णता।

6– अभिमान एवं अहंकार

इनके अतिरिक्त और भी कारण हो सकते हैं। सत्य की खोज करने वालों को चाहिये कि इन नकारात्मक भावनाओं से खुद को बचाने की कोशिश करें।

सत्य को मान लेने के उपरान्त :–

सत्य को स्वीकार करने वाला इन्सान इस्लाम में प्रवेश पाकर सारे झूठे खुदाओं का इन्कार करता है। एक

ईश्वर पर ईमान लाता है यानी एकेश्वरवाद अपना होता है। एकेश्वरवाद के व्यवहारिक अपेक्षाओं को पूरा करने की ज़िक्र करता है। ईश्वर के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपना मार्गदर्शन और लीडर स्वीकार करता है। आपकी शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करता है, वह परलोक में कर्मों के पूछगच्छ और उत्तरदायित्व के गहरे एहसास और यक़ीन से कभी खाली नहीं होता। अपने पूरे जीवन में बहुदेववाद तथा परम्पराओं और रीतियों से बचकर ईशभय यानी धर्म परायणता का जीवन व्यतीत करता है।

सत्य को स्वीकार कर लेने के बाद इस्लाम पर अमल करने की शुरूआत जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने से होती है। किसी व्यक्ति के इस्लाम में प्रवेश पाते ही कुछ ही घन्टे व्यतीत हुये हैं कि अज़ान की आवाज़ सुनाई देती है या नमाज़ का समय आ जाता है तो उसे नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना होता है। मानो एकेश्वरवाद और ईशदूतत्व की गवाही देने के बाद पहला व्यवहारिक कर्तव्य नमाज पढ़ना है। इस सम्बंध में उसे वुजू, गुस्ल (स्नान) पवित्रता और अपवित्रता के ज़रूरी मसलों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। कुरआन की छोटी-छोटी सूरों को अनुवाद के साथ याद कर लेना ज़रूरी है ताकि नमाज़ में ध्यान लगे और अर्थ और मायने जानने के कारण एकाग्रता और विनम्रता के साथ नमाज़ अदा कर सके। इसके बाद इस्लाम की दूसरी चीज़ों का ज्ञान होना आवश्यक है। रमज़ान के

महीने में रोजे रखना अनिवार्य है। अगर वह सार्मथ्य रखता हो तो हज करना और ज़कात देना भी अनिवार्य है। फिर बन्दों के अधिकार यानी माता-पिता, बीवी-बच्चे, भाई-बहन और दूसरे सम्बन्धियों, पड़ोसियों और दूसरे इन्सानों के अधिकार इस्लाम में निर्धारित हैं। इन सारे अधिकारों का अदायगी ज़रूरी है। सत्य को स्वीकार कर लेने के बाद माता-पिता, भाईयों-बहनों और दूसरे सम्बन्धियों का सम्बंध इन्सान से खत्म नहीं हो जाता। (चाहे वह इस्लाम न स्वीकार किये हों) इस्लाम उन सारे सम्बंधों को बाकी रखता है और उनके अधिकारों की अदायगी पर ज़ोर देता है। एक सच्चे मुसलमान के लिये इन उल्लिखित अधिकारों की अदायगी ज़रूरी है। हां, अगर कोई भी रिश्तेदार माता-पिता सहित उसे बहुदेववाद या अधर्म के लिये आमादा करना चाहें तो उसकी गुन्जाइश बिलकुल नहीं है। पथभ्रष्टता (गुमराही) की ओर बुलाये तो उसकी बात नहीं मानी जायेगी।

सत्य को स्वीकार कर लेने के साथ ही एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी :-

कुरआन मजीद को अरबी भाषा सीखकर समझने की कोशिश करना चाहिये। कुरआन मजीद अरबी भाषा में है, मगर उसके अनुवाद विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध हैं, परन्तु मात्र अनुवाद पढ़ते रहना सही नहीं है। अरबी शब्द पढ़ना भी ज़रूरी है।

कुरआन मजीद के एक अक्षर पढ़ने पर दस नेकियों

का अज्र व सवाब (प्रतिदान) मिलता है। इसके अतिरिक्त कुछ हदीसों तथा धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन भी करना चाहिये। इस्लाम धर्म नहीं है, बल्कि वह ज्ञान तथा सत्कर्मो का नाम है।

सत्य के स्वीकार करने के बाद एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अपने माता-पिता, बीवी-बच्चे और रिश्तेदारों को सत्य धर्म से परिचित कराने, उनकी ग़लत फ़हमियां दूर करने और सत्य को स्वीकार करने के लिये उन्हें आमादा करने की है। इस्लाम और मुसलमानों के सम्बंध से (मीडिया और अन्य संसाधन) से जो गलत प्रोपेगन्डा किया जा रहा है, उसके नतीजे में इस्लाम और मुसलमानों की तस्वीर बड़ी भयानक बना दी गयी है। कभी-कभी सत्य स्वीकार कर लेने के बाद उसके नकारात्मक प्रभाव घर तथा परिवार वालों पर पड़ते हैं। परन्तु उस वजह से मायूस नहीं होना चाहिये, या खामोशी अपना करके घर तथा परिवार के लोगों से सम्बंध नहीं तोड़ना चाहिये, बल्कि तत्वदर्शिता और दिल की तड़प के साथ कोशिश करनी चाहिये कि उनकी गलत फहमियां दूर हों। इस्लाम के लिये उनके दिल ने नर्म गोशा पैदा हो, वह सत्य की ओर आने वाले की इस्लामी ज़िन्दगी और स्वच्छ एवं पावन चरित्र, को देख कर सत्य की ओर आकृष्ट हों। कुरआन का अनुवाद और हज़रत मुहम्मद सल्ल० का पवित्र जीवन का अध्ययन करके सत्य की ओर बढ़ने के लिये तैयार हों। विशेष रूप से उनके हिदायत के लिये ईश्वर से प्रार्थना भी करते रहना चाहिये।

अन्तिम शब्द

थोड़ी देर के लिये मान लीजिये कि प्रलय, परलोक, मरणोपरान्त जीवन, हिसाब का दिन, कर्मो की पूछगच्छ, स्वर्ग और नरक कुछ नहीं है। सांसारिक जीवन ही अन्तिम सच्चाई है। ऐसी स्थित में ईश्वर का इन्कार करने वाले, एक ईश्वर को मानने वाले या बहुत सारे ईश्वरों को मानने वाले, सभी का परिणाम एक सा होगा। किसी के लिये परलोक की विफलता का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, क्यों कि मृत्यु के बाद जीवन है ही नहीं तो कैसी सफलता और कैसी विफलता ?

परन्तु यदि मामला इसके विपरीत हो और वास्तव में प्रलय घटित होती है तो क्या होगा ? ईश्वर सारे इन्सानों को एकत्र करके विश्वास एवं सत्कर्मो के सम्बंध से पूछगच्छ करेगा। पारलौकिक जीवन में विश्वास तथा कर्मो के आधार पर स्वर्ग देगा, ईश्वर के इनकार या बहुदेववाद के आधार पर नरक का निर्णय देगा।

ऐसी स्थिति में जिन लोगों ने परलोक का इनकार किया था, उनका परिणाम कितना दर्दनाक होगा। दुनिया की तरह पारलौकिक जीवन अस्थायी और नष्ट होने वाली नहीं होगी, बल्कि सदैव के लिये होगी। कुरआन ने साफ तौर पर बताया है कि परलोक के इन्कारी गिड़गिड़ाकर निवेदन करेंगे कि ईश्वर उन्हें फिर एक बार दुनिया में भेज दे, ताकि वह अच्छे कार्य करके ईश्वर के पुरस्कार के पात्र बनें, मगर उस समय उन्हें बता दिया जायेगा कि अवसर तो उन्हें दिया

जा चुका। दुनिया में उन्हें जीवन की मोहलत दी गयी थी, ज्ञान, चेतना और बुद्धि की नेमतें प्रदान की गयी थीं। उनके अस्तित्व और धरती तथा आकाशों के अन्दर अनगिनत निशानियां फैला दी गयी थीं। इसके अतिरिक्त अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर कुरआन अवतरित किया गया था और आप सल्ल० के सम्पूर्ण जीवन का विस्तृत विवरण सुरक्षित था, परन्तु उनमें से किसी चीज़ से उन्होंने कोई लाभ नहीं उठाया। परलोक के लिये विश्वास और सत्कर्म का मार्ग ग्रहण नहीं किया और हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अनुसरण नहीं किया। इसलिए वह असफल और बदकिस्मत साबित हुये और उनका अंजाम नरक की यातना है। विफलता और नरक की यातना के पात्र होने की ज़िम्मेदारी उन पर ही आती है।

यह जीवन एक ही बार मिला है। मृत्यु अचानक आकर उसकी जीवन लीला समाप्त कर देगी। इसलिये इन्सान को चाहिये कि दुनिया में मिलने वाले अवसर से लाभ उठाये और अपने आपको परलोक की विफलता और अपमान से बचाये।

ऐ इन्सान खुद को पहचान